आर्य-सङ्गीत रत्नमाला का...१म रत्न

हृद्वीणा

हृद्वीणा की मृदु मधु तान,
भरदे नभ में वह आह्वान;
सुप्त हृदय में जो भर प्राण,
करदे नवजीवन निर्माण।

रचयिता—

कविराज, आचार्य द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री

एम. आर. ए. एस.

प्रकाशक—
पं० राजेन्द्रनाथ शर्मा वैद्यभूषण
C/O वेद संस्थान, गुरुकुल,
वृन्दावन (मथुरा)

मूल्य सजिल्द का १)
,, अजिल्द का ।।।)

सं० १९९४ वि०

मुद्रक—
बा० प्रभुदयाल मीतल,
अग्रवाल प्रेस, वृन्दावन

प्रथम बार
१००० प्रतियाँ

भूमिका

आत्मा की अन्तरनुभूति की अभिव्यक्ति का नाम ही कविता है, उस परम-आत्मा की अन्तरनुभूति की एक सर्वोत्तम अभिव्यक्ति होने के कारण यह जड़ चेतन जगत् स्वयं एक सुन्दर अमर-दृश्य काव्य है। इस दृश्य चराचर के सौन्दर्य से प्रभावित सहृदय-हृदय के उच्छ्वसित आवेगों का सुचारु रूप में चित्रण करना ही काव्य-कला है। ध्वनि एवं व्यञ्जना की अलक्ष्य मञ्जु रश्मियाँ कविता को अनुरञ्जित कर उसे अपूर्व आकर्षणमय बना देती हैं, सत्कविता का प्रभाव अमोघ एवं व्यापक है, वह व्यक्ति एवं समष्टि दोनों पर समान रूप से अबाध शासन करता है। उसमें दिव्य एवं मानवीय दोनों आभाएँ सुतरां निहित रहती हैं। मैं तो कविता को आभास्फटिक (Prism) से उपमा दिया करता हूँ। जिस प्रकार प्रिज्म में अनेक रङ्ग-रूप दृष्टिगोचर होते हैं, उसी प्रकार कविता में भी अनेक लक्ष्यालक्ष्य भावावेश उद्भासित होते हैं। वस्तुतः सत्कविता सञ्जीवनी का काम करती है। सुप्त को जागृत एवं मृत को प्राणित करने में सत्कविता समर्थ होती है। क्या मृतप्राय स्पार्टा को एक कवि ने ही कविता द्वारा नवजीवन प्रदान कर विश्व-विजयी न बनाया था ? कवि अपनी आन्तरिक अनुभूति से कुछ ऐसी सुषमा सृजन करता है कि जो मानव हृदय को स्पर्श किये विना नहीं रहती, जहाँ शुष्क तुकबन्दी हमारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं

डाल सकती, वहाँ कला पूर्ण कवि की मर्मस्पर्शी प्रतिभा हमारी आत्मा में अनुपम उल्लास एवं चमत्कृति को स्फुरित कर देती है। इसीलिये राष्ट्रनिर्माण में कवि का बहुत बड़ा भाग होता है। कवि अपनी मार्मिक-लेखनी की नोक से निर्जीव जाति को सजीव बना सकता है। वक्ता एवं वीर योद्धा वह कार्य कदाचित् नहीं कर सकेगा, जिसे कवि की हृदयस्पर्शी वाणी सरलता से कर सकती है। जगत् प्रख्यात कवि शैली ने यथार्थ ही कहा है—

The basis of morality is laid not by preachers but by poets. अर्थात् आचार की नीव वक्ता नहीं, अपितु कवि स्थापित करते हैं।

आज मैं जिस काव्य की भूमिका लिख रहा हूँ, उसका नाम है—"हृद्वीणा"। इसका सृजन कविराज श्री पं० द्विजेन्द्रनाथजी शास्त्री की प्रतिभा पूर्ण लेखनी से हुआ है। शास्त्रीजी संस्कृत एवं हिन्दी के उच्च प्रतिभाशाली प्रौढ़ एवं सरस कवि हैं। आपकी कविता में कान्ति है, ओज है, और है प्रसाद सम्पन्न प्रतिभा। आपकी प्रस्तुत रचना वस्तुतः हृदय की वीणा ही है-- इसके सङ्गीतमय गान हृदय को झंकृत करने वाले हैं, आह्लादित करने वाले हैं, हृद्वीणा की कविताओं में सन्देश-वाहकता है, वे प्रोत्साहन, प्रेरणा एवं आशामय उज्ज्वल भावनाओं से आपूरित हैं। पदों में प्रसाद है, भावों में उदात्तता एवं समुज्वलता है; मार्मिकता है; हृदयस्पर्शिता है। भक्ति, अध्यात्मता, राष्ट्रियता एवं दार्शनिक झलक पदे २ मूर्तिमती सी हुई नृत्य करती प्रतीत होती है।

गा दे गायक ! वह दिव्यगान । पुलकित हो जिससे विश्वप्राण ॥
जाग्रत हो नभ में दिव्य भाव । भासे दिशि दिशि पुण्य-प्रभाव ॥
वसुधा-मण्डल हो दीप्तिमान ॥ गा दे० ॥

पद-विन्यास, अति सुन्दर, एवं मधुर है, विचारधारा हृदस्पर्शी है । यद्यपि 'हृद्वीणा' में कल्पनाओं को ऊँची उड़ान एवं रहस्यवाद अथवा छायावाद का अतिरेक नहीं तथापि भावों में एक अपूर्व चमत्कृति है, हृदयग्राहकता है—

दिन-मणि गगन-मञ्च पर आया ।
सुप्त प्रकृति में जीवन लाया ॥
तेरे पथ में देख बिछाया ।
सुन्दर स्वर्ण-पराग ॥पथिक उगी०॥

राष्ट्रिय भावनाओं ने 'हृद्वीणा' की कविताओं को और भी सजीव एवं प्राणित कर दिया है, जिसके 'जन्मभूमि-स्तवन' 'भारत' 'राष्ट्र-गान' आदि कविताएँ प्रकृष्ट उदाहरण हैं ।

सङ्गीत—कविता तथा सङ्गीत में घनिष्ट सम्बन्ध है । कविता में जितनी अधिक सङ्गीतात्मकता होगी, उतनी ही वह सरस,मृदुल एवं मधुर होगी । यदि ध्वनि और व्यञ्जना को कविता का प्राण कहा जाय, तो सङ्गीत उसका हृदुस्पन्दन है । सङ्गीत-हीन काव्य एक सुन्दर किन्तु गन्ध हीन पुष्प के समान है । इस दृष्टि से भी 'हृद्वीणा' अपनी एक अनन्य विशेषता रखती है । यह एक गीति-काव्य है, इसकी प्रायः सभी कविताएँ सङ्गी-

तात्मक हैं। निस्सन्देह 'हृद्वीणा' साहित्य एवं सङ्गीत का एक हृदयङ्गम सङ्गम है—

नाथ! दया क्या कर न सकोगे।
अपने अमृत-मधुर गुञ्जन से,
मुखरित नव नीरव स्पन्दन से,
प्राण-हीन जीवन-वीणा को—
प्रस्पन्दित क्या कर न सकोगे॥

रचना कितनी मधुर एवं सङ्गीतमय है, भावुकतापूर्ण है। इसकी मधुर-तान से किसका हृदय-सरोवर उद्वेल्लित न हो उठेगा।

अस्तु, साम्प्रतिक हिन्दी-साहित्य में सङ्गीत-काव्य की बड़ी आवश्यकता है, विशेषतया उज्ज्वल भावना वाले, जीवन एवं जागृति का सन्देश देने वाले काव्य तो अत्यल्प हैं। मेरी सम्मति में 'हृद्वीणा' इस कमी की पूर्ति में बड़ी सहायक होगी। हमारा सङ्गीत उच्च साहित्य से वञ्चित सा ही है। अतः ऐसे काव्य का हिन्दी साहित्य-मन्दिर में हम हृदय से स्वागत करते हैं। और आशा करते हैं कि जनता 'हृद्वीणा' को प्रेम से अपनायेगी। अन्त में शास्त्रीजी से भी साग्रह निवेदन करते हैं कि वे अपनी प्रखर प्रतिभा-प्रसूत कविता-रत्नावली से हिन्दी-साहित्य को भविष्य में भी आभूषित करते रहें।

गुरुकुल-विश्वविद्यालय,
वृन्दावन।
१२—१२—३७

बृहस्पति
(प्रिंसिपल)

लेखक के दो शब्द

'हृद्वीणा' के रूप में आज जो गीतिका पाठकों के सम्मुख उपस्थित की जा रही हैं, वे प्रकाशित करने के विचार से कभी नहीं रची गयी थीं, उनकी रचना तो उन-उन अवसरों पर स्वान्तर में उठे हुए भावों को 'स्वान्तः सुखाय' प्रकट करने का प्रयत्नमात्र था; किन्तु अपने बम्बई निवास-काल में समय-समय पर जब जब कुछ सङ्गीत सम्मेलनों में उपस्थित होने का अवसर प्राप्त हुआ तब तब मुझे सङ्गीत-क्षेत्र में उच्च एवं सुरुचिपूर्ण समुज्ज्वल भावों से युक्त साहित्य का अभाव सदा अखरता था। महाराष्ट्र (बम्बई) के प्रसिद्ध नाट्यकार श्री मामा वरेरकर तथा प्रसिद्ध सङ्गीताचार्य बापू पेण्ढारकर एवं गायनाचार्य श्री पं० देवधरजी शास्त्री भी मेरे इन विचारों से सहमत हुए और वे समय-समय पर अपने नाट्य अभिनयों आदि की आवश्यकतानुसार कुछ रचनाएँ करा लेते रहे, जिनमें से अनेक रचनाओं को उन्होंने रिकार्डों में भी सङ्कलित कराया। यथा,—

'आशा', 'लोरी' इत्यादि।

इस प्रकार; समय-समय पर रची गई कुछ कविताओं का संग्रह ही 'हृद्वीणा' के रूप में पाठकों की भेंट किया जा रहा है। यदि जनता के हृदय में इन सङ्गीतों द्वारा कुछ भी भक्ति, धर्म, विश्व-बन्धुत्व एवं राष्ट्रियता की भद्र-भावनाएँ स्पन्दित हुईं तो मैं अपने प्रयत्न को सफल मानूँगा।

अन्त में मैं इस पुस्तक के 'स्वरकार' (Notation) बम्बई के प्रसिद्ध गायनाचार्य श्री पं० देवधरजी शास्त्री, एवं सङ्गीताचार्य श्रीहरिजी 'भारतीय' का हृदय से आभारी हूँ कि जिन्होंने बड़े परिश्रमपूर्वक गीतों का स्वराङ्कन कर उन्हें प्रोज्वल एवं उपयोगी बना दिया है। आवागढ़ के राजा साहिब श्री सूर्यपालसिंहजी को भी हमारा हार्दिक धन्यवाद है कि जिन्होंने राज-गायनाचार्य श्रीबलवन्तरावजी को भेजा, जिनसे स्वरलिपि में बड़ी सहायता मिली तथा उदीयमान सङ्गीतज्ञ श्री पं० राजबल जी शर्मा बी० ए० का भी उनके ट्यून सम्बन्धी परामर्शों के लिये धन्यवाद करते हैं। कविराज श्री पं० वीरसेनजी आयुर्वेद शिरोमणि को हमारा हार्दिक धन्यवाद है जिनकी सहायता एवं सहयोग के बिना इसका समय पर प्रकाशित हो सकना कठिन था। चिरसहचारिणी श्रीमती सौ० गार्गी देवी पण्डिता को भी प्रूफ संशोधनआदि अमूल्य सहयोग के लिये हार्दिक धन्यवाद है।

अन्त में साहित्य-मर्मज्ञ श्री पं० बृहस्पतिजी शास्त्री वेद-शिरोमणि आचार्य, गुरुकुल-वृन्दावन के लिये भी हमारा हार्दिक शत शत धन्यवाद है कि उन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इसकी भूमिका लिख हमें उपकृत किया है।।

द्विजेन्द्रनाथ

सूची

स्वर-ताल-तालिका:—

मन्द्र-सप्तक:—जिन स्वरों के नीचे बिन्दु (·) होगा वे मन्द्र सप्तक में लगेंगे। जैसे:-नि़ ध़ प़ इत्यादि।

तार-सप्तक:—जिन स्वरों के ऊपर बिन्दु होगा वे तार सप्तक के स्वर होंगे जैसे:--सां रें गं मं इत्यादि।

मध्य-सप्तक:—का कोई चिन्ह नहीं होगा।

जैसे:—स रे ग म इत्यादि।

कोमल-स्वर:—जिग स्वरों के नीचेलकीर है वे कोमल स्वर हैं जैसे:-रे॒ ग॒ ध॒ नि॒।

तीव्र-स्वर:—जिस स्वर के ऊपर खड़ी लकीर हैं वह तीव्र स्वर है जैसे:—मॅ।

मीड:—जिस स्वर के ऊपर ⌒ यह अर्द्धवर्तुल लकीर होगी वे स्वर मीड़ लेकर बजेंगे! जैसे: प रे रे प इत्यादि।

ताल:—जिन स्वरों पर ताल देना होता है उन पर निम्न चिन्ह होंगे। × २ ० ३ आदि।

खाली ताल:---जहाँ ताल खाली रहती है वहाँ (०) यह चिन्ह होगा।

ताल–विवरण

दादरा ६ मात्रा

१	२	४	५	६
×		०		

झपताल १० मात्रा

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
×		२			०		३		

एक ताल [चौताला १२ मात्रा:—

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
×		०		२		०		३		४	

त्रिताल १६:—

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
×				२				०				३			

हृद्वीणा

वन्दे

[राग भैरव]

वन्दे व्यापक-मजमोङ्कारम् ।
अजरममरमविकलमविकारम् ॥

सर्गादौ प्रकटित-वर-वेदम् ।
परिशोधित सदसद्गतभेदम् ॥
कृत-बहुविध-संसृतिशृङ्गारम् ।
वन्दे व्यापक-मजमोङ्कारम् ॥

विमल-विश्व-विज्ञान-निधानम् ।
कृत-खगोल भूगोल विधानम् ॥
दुष्कृत-सुकृत-सुफल-दातारम् ।
वन्दे व्यापक-मजमोङ्कारम् ॥

* *

मुनि-जन-मानस-मञ्जुमरालम् ।
परम-सूक्ष्म मपि परम विशालम् ॥
दुःख-दुरापद्दु-रित-कुठारम् ।
वन्दे व्यापक-मजमोङ्कारम् ॥

राग भैरव

[त्रिताल, मात्रा १६; वादी–ध, संवादी–रे, गाने का समय प्रातः]

स्थायी

२				०				३				+			
नी	स	नी	ध	प	ध	म	प	प	–	नी	–	स	–	स	–
वं	ऽ	दे	ऽ	व्या	ऽ	प	क	म	ज	मों	ऽ	का	ऽ	र	म्
नी	स	ग	म	प	ध	नी	सं	नी	ध	प	म	ग	रे	स	–
अ	ज	र	म	म	र	म	वि	क	ल	म	वि	का	ऽ	र	म्

अन्तरा

२				०				३				+			
ग	–	ग	म	प	–	ध	प	ध	–	नी	–	सं	–	सं	–
स		गा	ऽ	दौ	ऽ	प्र	क	टि	त	व	र	वे	ऽ	द	म्
नी	सं	रें	सं	नी	सं	ध	प	म	प	ध	–	–	–	प	–
प	रि	बो	ऽ	धि	त	स	दं	स	द्	ग	त	भे	ऽ	द	म्
ग	म	ध	प	म	ग	म	–	ग	रे	ग	म	ग	रे	स	–
कृ	त	ब	हु	वि	ध	सं	ऽ	स्मृ	ति	शृं	ऽ	गा	ऽ	र	म्

नोट—इस राग में रे, ध कोमल और शेष शुद्ध स्वर लगते हैं।

उद्बोध

[भैरवी]

पथिक ! उगी अरुण-उषा अब जाग ।
जाग सखे ! अब निज अतीत का,
गाले करुणाराग ॥

* *

हटा तिमिर रजनी का अञ्चल,
छटा छागई दिशि-दिशि उज्ज्वल,
पड़ा सोरहा क्यों चल उठचल,
मधुर स्वप्न को त्याग ॥

* *

क्षणभङ्गुर है यह सुख-स्वपना,
हित न निहित* इसमें कुछ अपना,
होगा फिर आतप में तपना,
वृथा न कर अनुराग ॥

* *

दिनमणि × गगन-मञ्च पर आया,
सुप्त-प्रकृति में जीवन आया,
तेरे पथ में देख बिछाया,
सुन्दर-स्वर्ण-पराग ÷ ।

---

* छिपा हुआ. × सूर्य. ÷ रज.

राग, भैरवी

[त्रिताल, मात्रा १६; वादी-म, संवादी-स. गाने का समय-प्रातः

स्थाई

३	०	३	+
			स प
नी स ग म	प ध प प	ग - म प	रे - स, स
थि क उ गी	अ रु ण उ	षा ऽ अ व	जा ऽ ग, प
नी स ग म	सं ध नी प	ध म प ग	म रे ग स
थि क उ गी	जा ऽ ऽ ग	स ऽ खे ऽ	नि ज ध्य ती
म ग रे स	नी स ग म	प ध नी सं	संनी धप मग, रेस
ऽ त का ऽ	गा ऽ ले ऽ	क रु णा ऽ	राऽ ऽऽ गऽ, पऽ

अन्तरा

२	०	३	+
नी स ग म	ध म – म	ध म ध नी	सं – सं –
थि क उ गी	उ ठा ऽ ति	मि र र ज	नी ऽ का ऽ
सं – सं सं	सं गं रें गं	सं रे नी सं	ध नी प ध
अं ऽ च ल	छ टा ऽ छा	ऽ ग ई ऽ	दि शि दि शि
म प प प	ध – – नी	– स स –	ग – ग म
उ ऽ ज्व ल	प ड़ा ऽ सो	ऽ र हा ऽ	क्यों ऽ च ल
रे – स –	नीस गम पध नीसं	संनी धप मग रेस	रे – स, स
उ ठ च ल	मऽ घुऽ रऽ स्वऽ	ऽऽ मऽ कोऽ ऽऽ	त्या ऽग, प

नोट—इस राग में रे, ग, ध, नी, कोमल और शेष शुद्ध स्वर लगते हैं।

प्रत्येक अन्तरा 'पथिक उगी' तक गाकर ही आरम्भ करना चाहिये।

विजय-गान

[राग भैरवी कहरवा]

दीनबन्धो ! हमें दिव्य वरदान दो ।
शक्ति दो भक्ति दो आत्म सम्मान दो ॥

प्रेम दो जाति का, धर्म-अनुराग दो,
राष्ट्र-हित की धधकती हुई आग दो,
देव ! कर्मण्यता दो नवप्राण दो,
दीनबन्धो ! हमें०

* * *

भव्य-भारत कभी विश्व-भण्डार था,
श्रीसदन❀ था सकल सम्पदागार था,
फिर वही नाथ ! इसको गुरु-स्थान दो,
दीनबन्धो ! हमें०

* * *

भानु भारत बनें विश्व के व्योम+ का,
हाँ जयध्वज उड़े फिर यहाँ ओम् का,
प्रेम के पुण्य-पीयूष का पान दो,
दीनबन्धो ! हमें०

* * *

❀ लक्ष्मी. + आकाश.

दिव्य भारत प्रभो ! पूर्ण स्वाधीन हो,
पूर्ववत् विश्व-सिंहासनासीन हो,
विश्वस्वामिन् ! जगत् को अभयदान दो,
दीनबन्धो ! हमें०

* * *

आज सब वीर मिल यह प्रतिज्ञा करें,
देश स्वाधीन हो हम जियें या मरें,
देव ! वरवीरता का विजय-यान दो,
दीनबन्धो ! हमें०

* * *

राष्ट्र-हित ही जियें राष्ट्र-हित ही मरें,
राष्ट्र-हित ही करे कार्य जो कुछ करें,
व्योम-व्यापी यही एक आह्वान दो,
दीनबन्धो ! हमें०

* * *

राष्ट्र सब स्वस्वराज्याधिकारी रहें,
दासता को न कोई किसी की सहें,
विश्व को ईश ! अब यह विजय-गान दो,
दीनबन्धो ! हमें०

राग, भैरवी

[कहरवा, मात्रा ८, गाने का समय प्रातः]

स्थायी

+				०				+				०			
														स	रे
														दी	न
म	–	म	म	ग	–	रे	स	स	स	–	रे	ग	–	स	रे
बं	ऽ	धो	ह	में	ऽ	दि	व्य	वर	दा	ऽ	न	दो	ऽ,	दी	न
म	–	म	म	गम	गप	पम	गरे	सरे	स	–	रे	ग	–	रे	रे
बं		ऽधो	ह	में	ऽऽ	दिऽ	व्यऽ	वर	दा	ऽ	न	दो	ऽ,	श	क्ति
स	–	ध	नि	स	–	स	रे	ग	–,	रे	स	स	–,	स	रे
दो	ऽ	भ	क्ति	दो	ऽ	आ	त्म	सं	मा	ऽ	न	दो	ऽ,	दी	न

अन्तरा

+				०				+				०			
														ध	म
														प्रे	म
ध	ध	–	नी	सं	–	सं	सं	सं	नी	सं	ध	प	–	प	प
दो	जा	ऽ	ति	का	ऽ,	ध	र्म	अ	नु	रा	ग	दो	ऽ,	रा	ष्ट्र
गं	गं	गं	गं	संरें	संगं	रेंसं	नीसं	संनी	धप	मग	रेस	स	–	स	स
हि	त	की	ध	धऽ	कऽ	तीऽ	हुऽ	ईऽ	ऽऽ	आऽ	गऽ	दो	ऽ,	दे	व
सं	प	–	प	पध	पनी	धप	मप	म	ग	रे	स	म	–	स	रे
क	र्म	ऽ	ण्य	ताऽ	ऽऽ	दोऽ	ऽऽ	न	व	प्रा	ण	दो	ऽ,	दी	न

नोट—इस गान को सुविधार्थ कहरवा में रक्खा है, परन्तु दादरा में अधिक अच्छा है।

अन्तरा आरम्भ करते समय 'दीन' के स्थान में 'प्रेम' अर्थात् प्रत्येक अन्तरा के दो अक्षर 'स, रे' के स्थान पर 'ध-म' बोलना चाहिये।

ज्योति

ॐ असतो मा सद्गमय,
तमसो मो ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मा अमृतं गमयेति।

[वेद]

[राग, भैरव, तीव्रा]

हों असत्से दूर हम प्रभु!
सत्य का वरदान दो।
क्षीण हो द्रुत तिमिर भगवन्!
दिव्य-ज्योति-वितान दो॥

* * *

मृत्यु—बन्धन दूर कर,
अमरत्व हे भगवान् दो।
प्रकृति-पाशों* से छुड़ा,
आनन्द-मधु का पान दो॥

---

* सत रज तम स्वरूप

राग, भैरव

[तीव्रा, ७ मात्रा | समय--प्रातः]

स्थायी

+			२		३		+			२		३	
स	ध	ध	प	ध	म	प	ग	म	ग	रे	रे	स	स
हों	ऽ	अ	स	त्	से	ऽ	दू	ऽ	र	ह	म	प्र	भु
नी	स	ग	म	प	ध	नी	सं	नी	ध	प	म	गरे	स
स	ऽ	त्य	का	ऽ	व	र	दा	ऽ	न	दो	ऽ	ऽऽ	ऽ
ध	-	ध	नी	-	नी	स	रे	रे	रे	स	-	स	स
क्षी	ऽ	ण	हो	ऽ	द्रु	त	ति	मि	र	भ	ग	व	न्
नी	स	ग	म	प	ध	नी	रें	-	सं	संनी	धप	मग	रेंस
दि	ऽ	व्य	ज्यो	ऽ	ति	वि	ता	ऽ	न	दोऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ

अन्तरा

+			२		३		+			२		३	
गम	-	म	प	-	ध	ध	पध	नीसां	रें	सं	-	सं	सं
मृऽ	ऽ	त्यु	बं	ऽ	ध	न	सेऽ	ऽऽ	छु	ड़ा	ऽ	क	र
सं	रें	रें	रें	-	सं	रें	धनी	संरें	सं	ध	-	ऽ	प
अ	म	र	ता	ऽ	भ	ग	वाऽ	ऽऽ	न	दो	ऽ	ऽ	ऽ
ध	ध	ध	प	ध	म	प	ग	म	ग	रे	रे	स	स
प्र	कृ	ति	पा	ऽ	शों	ऽ	से	ऽ	छु	ड़ा	ऽ	क	र
नी	स	ग	म	प	ध	नी	सं	नी	ध	प	म	गरे	स
आ	न	न्द	म	धु	का	ऽ	पा	ऽ	न	दो	ऽ	ऽ	ऽ

वेद-वीणा

प्रभो ! वेद-वीणा बजे विश्वभर में।
सुनें मन्त्र-झङ्कार प्रत्येक घर में॥

पियें प्रेम-पीयूष मिल प्रीति से सब,
करे स्नान संसार शुभ-स्नेह-सर में।
बँधें विश्व-बन्धुत्व की शृङ्खला में,
करें रक्त-रञ्जित न धरणी समर में॥

सभी राष्ट्र होवें स्वराज्याधिकारी,
बली निर्बलों को न जकड़ें स्वकर* में।
उगे व्योम में वेद का दिव्य-भानु,
खिलें पुण्य-पङ्कज मनो-मानसर × में॥

पताका उड़े ओम् की व्योम में फिर,
बहे विश्व स्वाधीनता की लहर में।
अमर-शान्ति का गान गूँजेगगन में,
सुधा-सी बरसने लगे सप्त-स्वर में॥

राग, माल गुंजी

[झपताल, मात्रा १०,]

स्थायी

×		२			०		३		
									ग
									प्र
साग	म	ग	रे	सा	रे	सा	नि	ध	नि
मोऽ	ऽ	वे	ऽ	द	वी	ऽ	णा	ऽ	ब
सा	–	म	ध	ध	म	ग	रे	सा,	ग
जे	ऽ	वि	ऽ	श्व	भ	र	में	ऽ,	सु
म	ध	–	नि	सां	–	सां	–	सां	नि
नें	में	ऽ	त्र	झं	ऽ	का	ऽ	र	प्र
ध	म	ध	नि	ध	नि	ध	म	ग,	ग
ऽ	त्ये	ऽ	ऽ	क	घ	र	में	ऽ,	प्र

राग, माल गुंजी

[झपताल, मात्रा १०,]

स्थायी

×		२			०		३		
									ग
									प्र
साग	म	ग	रे	सा	रे	सा	नि	ध	नि
भोऽ	ऽ	वे	ऽ	द	वी	ऽ	णा	ऽ	ब
सा	—	म	ध	ध	म	ग	रे	सा,	ग
जे	ऽ	वि	ऽ	श्व	भ	र	में	ऽ,	सु
म	ध	—	नि	सां	—	सां	—	सां	नि
नें	में	ऽ	त्र	झं	ऽ	का	ऽ	र	प्र
ध	म	ध	नि	ध	नि	ध	म	ग,	ग
ऽ	त्ये	ऽ	ऽ	क	घ	र	में	ऽ,	प्र

अन्तरा

+		२			०		३		
									ग
									पि
म	–	ध	–	ध	नि	–	सां	–	सां
यें	ऽ	प्रे	ऽ	म	पी	ऽ	यू	ऽ	ष
सां	सां	ग॒ं	–	ग॒ं	रें	–	सां	–	सां
मि	ल	प्री	ऽ	ति	से	ऽ	स	ब,	क
सां	–	नि॒	–	नि॒	ध	–	म	–	ग
रें	ऽ	स्ना	ऽ	न	सं	ऽ	सा	ऽ	र
–	प	ध	ऽ	ध	ग॒	रे	सा	–,	ग
शु	भ	स्ने	ऽ	ह	स	र	में	ऽ,	प्र

विनय

[त्रिताल, मात्रा १६. *राग-भैरवी.* समय, प्रातः]

भज मन ओ३म् 'ओम्' 'ओम्' सुखसारम् ।

परम-पुनीतम्, श्रुतिगण-गीतम्,
अजरममरमविकारम् । भज मन०

दिशि दिशि लोके, यदपि विलोके,
तदखिलमेतिविकारम् । भज मन०

यदि संसारम्, तरितुमपारम्,
वाञ्छसि पारावारम् । भज मन०

स्थायी

०				३				+				२			
ग	प	प	ध	मप	धप	मग	रेसा	सा	रे	ग	म	सा	रे	सा	ऽ
भ	ज	म	न	ओऽ	ऽम्	ओऽ	ऽम्	ओ	ऽ	म्सु	ख	सा	ऽ	र	म्

अन्तरा

ग	प	प	ध	ध	ध	ध	ध	ध	मं	ध	नि	सां	सां	सां	सां
भ	ज	म	न,	प	र	म	पु	नी	ऽ	तं	ऽ	श्रु	ति	ग	ण
नि	सां	रें	सां	प	प	प	प	प	ध	नि	सां	ध	प	ग	रे
गी	ऽ	ऽ	तं	अ	ज	र	म	म	र	म	वि	का	ऽ	र	म्

हृद्वीणा

याचना

[राग, बागेश्वरी]

करो अब करुणा करुणाकन्द !

बन्धन टूटें जन्म-मरण के,
मिले मुक्ति-आनन्द ॥

मधुप बनें हम वेद कुसुम के,
पियें मधुर-मकरन्द ।
लोभ-मोह-मद-मत्सर त्यागें,
तजें छद्म-छल-छन्द ॥

* *

आर्य बनें शुभ कार्य करें सब,
रहें सदा स्वच्छन्द ।
स्नेहसुधा-रस पान करें शुभ,
खिलें हृदय-अरविन्द ॥

* *

निगमागम के हों अभ्यासी,
मिटें सभी दुःख द्वन्द ।
भक्त बनें स्वातन्त्र्य मन्त्र के,
रहें सदा सानन्द ॥

राग, वागेश्वरी

वादी 'म', सम्वादी 'सं'

[त्रिताल, मात्रा १६, समय, मध्य रात्रि]

स्थायी

२				०				३				+			
															म
															क
मप	ध	ग	रे	म	ग	रे	सा	ध	नि	सा	म	म	ऽ	म	प
रोऽ	ऽ	अ	ब	क	रु	णा	ऽ	क	रु	णा	ऽ	क	ऽ	न्द,	क
मप	ध	म	ग	म	ग	रे	स	ध	नि	सा	म	म	ऽ	ऽ	म
रोऽ	ऽ	अ	ब	क	रु	णा	ऽ	क	रु	णा	ऽ	क	ऽ	ऽ	न्द
रेग	मग	रे	सा	रे	ऽ	सा	ऽ	नि	ऽ	ध	नि	सा	सा	सा	ऽ
बंऽ	ऽऽ	ध	न	टू	ऽ	टें	ऽ	ज	ऽ	न्म	म	र	ण	के	ऽ
सा	सा	ऽ	म	ऽ	म	म	ऽ	मध	निसां	निसां	निध	मध	निध	पम,	
मि	ले	ऽ	मु	ऽ	क्ति	आ	ऽ	नंऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	दऽ,	

आचार्य धर्म धर आये

अन्तरा

२				०				३				+			
ग	म	ध	नि	सां	निसांऽ	सां	सां	नि	सां	रें	सां	नि	सां	नि	ध
म	धु	प	व	नें	ऽऽ	ह	म	वे	ऽ	द	कु	सु	म	के	ऽ
नि	नि	ऽ	नि	ध	म	ध	नि	सां	ऽ	ऽ	ऽ	नि	ध	नि	सां
पि	यें	ऽ	म	धु	र	म	क	रं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	द
नि	-	सां	मं	गं	रें	सां	सां	नि	ऽ	सां	सां	नि	सां	नि	ध
लो	ऽ	भ	मो	ऽ	ह	म	द	म	ऽ	त्स	र	त्या	ऽ	गें	ऽ
ध	ध	-	ध	-	नि	ध	म	मध	निसां	निसां	निध	मध	निध	पम,	
व	जें	ऽ	छ	ऽ	श	छ	ल	छंऽ	ऽऽ.	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	दऽ, क०	

[illegible]

अभिलाष

हे प्रभो ! फिर स्वर्ग भारतवर्ष हो,
पूर्वजों का प्राप्त पुनरुत्कर्ष हो !

विप्रवर तप त्याग की मधुमूर्ति हों,
वीर क्षत्रियगण दमकती स्फूर्ति हों।
विट् धनी हों श्रमिक-जन दुधर्ष हों,
हे प्रभो !

* *

भरत-भू हो अवनि की अमरावती,
* इन्दिरा–परिसेविता हो भारती।
धर्म, नीति, न्याय ही आदर्श हो,
हे प्रभो !

* *

देशवासी सब परस्पर मिल रहें,
× अमृतलतिका के कुसुम-सम खिल रहें,
बस कदापि न ऊँच-नीच-विमर्श ÷ हो,
हे प्रभो !

* *

---

* लक्ष्मी, × कल्पवल्ली, ÷ विचार,

राष्ट्र-रक्षा में सुसज्ज समर्थ हो,
स्वार्थ हो पर पूर्व पर-परमार्थ हो।
दुष्ट-दल के दमन में सोत्कर्ष हो,
हे प्रभो !

*   *   *

असुर-शासन का महेश्वर ! अन्त हो,
शान्ति-सुख-साम्राज्य देव ! अनन्त हो।
पाप का हो नाश पुण्योत्कर्ष हो,
हे प्रभो !

*   *   *

वेद-वीणा की मधुर झङ्कार हो,
धर्म का सर्वत्र जय-जयकार हो।
हृदय-कमलों में भरा मधु-हर्ष हो,
हे प्रभो ! फिर स्वर्ग भारतवर्ष हो !

राग, मिश्र

[मात्रा ७. ताल–रूपक]

स्थायी

सं	–	सं	नीसं	गरें	रं	स
हे	ऽ	प्र	भोऽ	ऽऽ	फि	र
नी	–	नी	पध	–	म	म
स्व	ऽ	र्ग	भाऽ	ऽऽ	र	त
प	–	नी	ध	–	–	मप
व	ऽ	र्ष	हो	ऽ	ऽ	ऽऽ
स	–	रे	ग	–	म	प
पू	ऽ	र्व	जों	ऽ	का	ऽ
ध	–	प	म	प	ग	रे
प्रा	ऽ	म	पु	न	रु	ऽ
रे	–	म	ग	–	–	सरे
त्क	ऽ	र्ष	हो	ऽ	ऽ	ऽऽ

नोटः—अन्तरे भी इसी प्रकार बजावें।

कुसुम

[राग पटदीप]

आज वेणु ! मधुतान सुना दे.
तिमिर-पूर्ण मम मन-मन्दिर में,
दिव्य-ज्ञान की ज्योति जगा दे,
आज वेणु !

*   *

भेद-भाव को मिटा मूल से,
स्नेह-सुधा का पान करा दे।
आज वेणु !

*   *

अन्धकारमय नभ-मण्डल में,
विमल वेद-रवि को चमकादे।
आज वेणु !

*   *

भरत-भूमि की शून्य वनी में,
फिर स्वतन्त्रता-कुसुम खिला दे।
आज वेणु !

राग, पटदीप

[त्रिताल, मात्रा १६]

स्थायी

०				३				+				२			
नि	धनिसांनि	ध	प	म	प	ग	म	ग	म	प	नि	नि	धनिसांनि	ध	प
आ	ऽऽऽऽ	ज	वे	ऽ	गु	मृ	दु	ता	ऽ	न	सु	ना	ऽऽऽऽ	दे	ऽ
ग	ग	ग	रे	ऽ	रे	सा	सा	नि	नि	सा	-	निसा	ग	रे	स
ति	मि	र	पू	ऽ	र्ण	म	म	म	न	मं	ऽ	दिऽ	र	में	ऽ
नि	ऽ	सा	सा	ग	ऽ	म	प	ग	म	प	नि	धनि	सांनि	ध	प
दि	ऽ	व्य	ज्ञा	न	ऽ	की	ऽ	ज्यो	ऽ	ति	ज	गाऽ	ऽऽ	दे	ऽ

अन्तरा

०				३				+				२			
प	ग	म	प	नि	नि	सां	ऽ	प	नि	सां	सां	निमं	गं	रें	सां
भ	र	त	भू	ऽ	मि	की	ऽ	शू	ऽ	न्य	व	नीऽ	ऽ	में	ऽ
नि	नि	सां	धनि	सां	नि	ध	प	ग	म	प	नि	धनि	सांनि	ध	प
फि	र	स्व	तंऽ	ऽ	त्र	ता	ऽ	फू	ऽ	ल	खि	लाऽ	ऽऽ	दे	ऽ

गुञ्जन

[सोहिनी त्रिताल।]

नाथ ! दया क्या कर न सकोगे ?
अपनी दिव्य-प्रभा क्या प्रभु इस
मन-मन्दिर में भर न सकोगे ?

जीवन-वन अज्ञान शिविर है,
छाया इसमें निविड़ * तिमिर है,
दिव्य-ज्योति भर क्या करुणाकर !
अन्धकार को हर न सकोगे ?

अपने अमृत-मधुर गुञ्जन से,
मुखरित-नव-नीरव स्पन्दन से,
प्राण-हीन जीवन-वीणा को,
प्रस्पन्दित क्या कर न सकोगे ?

दिव्यानन्द-सुधा बरसा कर,
जीवन-तरु को प्रभु ! सरसाकर,
हृदय-कुसुम को क्या हरषा कर,
सुरभित सुफलित कर न सकोगे ?

राग, सोहिनी

[त्रिताल, मात्रा १६, समय—रात्रिका चतुर्थ प्रहर]

वादी, ध; संवादी, ग,

स्थायी

०	२	+	३
सं - नी ध	म ग ग -	म ध म ध	मध नीसं नी ध
ना ऽ थ द	या ऽ क्या ऽ	क र न स	कोऽ ऽऽ गे ऽ
सं - नीसं रें	सं नि ध म	ग - म ध	ग रे स -
अ प नीऽ ऽ	दि ऽ व्य प्र	भा ऽ क्या ऽ	प्र भु इ स
नी स ग म	ध म ग -	ध म ग म	मध नीसं नी ध
म न मं ऽ	दि र में ऽ	भ र न स	कोऽ ऽऽ गे ऽ

यमन

अन्तरा

०	३	+	२
ग – मं मं	ध ग ग –	मं – ध नी	ध नी धनी सं
जी ऽ व न	व न श्र ऽ	श्रा ऽ न शि	वि र हैऽ ऽ
गं – गं –	मं गं रें सं	नी ध नी सं	नी ध मं ग
छा ऽ या ऽ	इ स में ऽ	नि वि ड़ ति	मि र है ऽ
गं – मं गं	रें सं नी ध	नी सं नी ध	म ग रे स
दि व्य ऽ ज्यो	ऽ ति भ र	क्या ऽ क रु	णा ऽ क र
नी स ग मं	ध मं ग –	ध मं ग मं	मंध नीसं नी ध
अं ऽ ध का	ऽ र को ऽ	ह र न स	कोऽ ऽऽ गे ऽ

भारत

धन्य हमारा भारत देश,
भूमण्डल का स्वर्ग विशेष।

प्यारा-प्यारा पुण्य प्रदेश,
जग से न्यारा नवल निवेश;
ज्ञान-ज्योति का आदि-दिनेश,
त्रिभुवन गगन-रम्य राकेश।
धन्य हमारा भारत देश,
भूमण्डल का स्वर्ग विशेष।

* *

जहाँ वृहस्पति, इन्द्र, गणेश,
जन्में ब्रह्मा, विष्णु, महेश;
श्रीपुरुषोत्तम राम नरेश,
कृष्ण. वृष्णिभूषण योगेश।
धन्य हमारा भारत देश,
भूमण्डल का स्वर्ग विशेष।

* *

धर्म, नीति, स्वातन्त्र्य विशेष,
रहें जहाँ जीवन उद्देश;
विश्व-बन्धुता का सविशेष,
देता रहा सदा सन्देश,
धन्य हमारा भारत देश,
भूमण्डल का स्वर्ग विशेष।

* *

जय-जय जय-जय प्यारे देश!
जयजय अजय अभय भुवनेश;
प्राणादपि प्रिय दिव्य प्रदेश!
जय-जय प्यारा भारत देश!
धन्य हमारा भारत देश,
भूमंडल का स्वर्ग विशेष।

31 राग, यमन भूपाली

[त्रिताल, कोरस (सम्मिलित गान) मात्रा १६;]

स्थायी

३	+	२	०
ग – ग ग	ग – रे –	ग – ध –	प – – –
ध ऽ न्य ह	मा ऽ रा ऽ	भा ऽ र त	दे ऽ ऽ श
ग – ग –	ग रे स रे	ग प ग रे	स ध़ स रे
भू ऽ मं ऽ	ड ल का ऽ	स्व ऽ र्ग वि	शे ऽ ऽ ष

अन्तरा

३	+	२	०
ग – ग –	प – ध प	सं – सं –	सं – – –
प्या ऽ रा ऽ	प्या ऽ रा ऽ	पु ऽ ण्य प्र	दे ऽ ऽ श
नी – नी –	नी – ध नी	सं रें सं नि	प – – –
ज ग से ऽ	न्या ऽ रा ऽ	न व ल नि	वे ऽ ऽ श
ध़ स रे ध़	स रे ध़ स	ग – ग –	ग – – –
आ ऽ न ज्यो	ऽ ति का ऽ	आ ऽ दि दि	ने ऽ ऽ श
स रे ग प	ध नी सं रें	सं नी ध प	ग रे स रे
त्रि भु व न	ग ग न र	ऽ म्य रा के	के ऽ ऽ श

नोट—इस गान की स्वर-लिपि विशेष कर विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर बनाई गई है ।

हृदीण.

आनन्द-नाद

[हमीर-तीव्रा]

आज मम मृदु वेणु ! गादे,
फिर वही आनन्द-नाद !
ब्राह्मणोंके क्षत्रियों के,
वणिक्‌जन के शूद्र के,
सुप्त हृदयों से प्रबलतर,
दूर हो जिससे प्रमाद।
आज मम मृदु वेणु !

विप्र हों वेदज्ञ, क्षत्रिय,
धर्म-रक्षक विट् धनी;
श्रमिक हों यदि साधुसेवक,
तो तुझे दूं धन्यवाद।
आज मम मृदु वेणु !

हो प्रजा नृप-भक्त राजा
भी प्रजा-वत्सल बनें;
हो परस्पर प्रेम पूरा,
राज्य हो स्वातन्त्र्य-वाद।
आज मम मृदु वेणु !

राग, हमीर

[तीव्रा, मात्रा १७,वादी ध,संवादी ग,समय रात्रि का प्रथमप्रहर]

स्थायी

×			२		३		×			२		३	
धनी	सांरें	नीसं	ध	प	म	प	मप	धप	गम	ध	-	ध	-
आऽ	ऽऽ	ज	म	म	मृ	दु	वेऽ	ऽऽ	गु	गा	ऽ	दे	ऽ
स	म	म	प	-	ग	म	ध	-	नी	धनी	सांरें	नीसं	ध
फि	र	व	ही	ऽ	आ	ऽ	नं	ऽ	द	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	द

अन्तरा

प	-	प	सं	-	सं	-	सं	-	सं	सं	-	सं	-
ब्रा	ऽ	ह्म	णों	ऽ	के	ऽ	क्ष	ऽ	त्रि	यों	ऽ	के	ऽ
ध	ऽ	नी	सं	-	रें	-	रें	-	-	नी	सं	ध	प
व	णि	क	ज	न	के	ऽ	शू	ऽ	ऽ	द्र	ऽ	के	ऽ
प	-	प	मप	ध	प	-	म	-	रे	स	रे	स	स
लु	ऽ	प्त	हृऽ	द	यों	ऽ	से	ऽ	प्र	ब	ल	त	र
प	-	प	म	प	ग	म	ध	-	ध	धनी	सांरें	नीसं	ध
दू	ऽ	र	हो	ऽ	जि	स	से	ऽ	प्र	माऽ	ऽऽ	ऽऽ	द

नोट—इस राग में दोनों मं, लगते हैं।

दर्पण

[राग—भूप]

मन-मृग ! क्यों भटके वन-वन में ।
परिमल मूढ़ ! बसे तव-तन में ॥

अनल छिपा है ज्यों अणु-अणु में,
गन्ध बसे प्रति पार्थिव-कण में;
त्यों मृग-मद तव नाभि-सुमन में,
मन मृग !

तिल में तैल अनल* में रूपम्,
मणि में द्युति, द्युतिमय-मणि-रूपम्;
दधि में माखन घृत माखन में,
मन मृग !

अन्तस्तल में है तव-प्यारा,
व्यर्थ फिरे क्यों मारा-मारा;
उत्तर कभी, कभी दक्षिण में,
मन मृग !

है यदि दर्शन की अभिलाषा,
बहिर्मिलन की त्याग दुराशा;
दर्शन कर निज हृद्दर्पण में,
मन मृग !

---

* अग्नि

राग, भूप

[त्रिताल, मात्रा १६,]

वादी, ध; संवादी, ग,

स्थायी

०	३	+	२
ध सां ध प	ग रे सा रे	सा ध़ सा रे	ग ग रेग पध
म न मृ ग	क्यों ऽ भ ट	के ऽ व न	न न मेंऽ ऽऽ*
ग ग ग रे	ग प ध पध	सां – सां सां	सां रें सांध पध
प रि म ल	मू ऽ ढ़ वऽ	से ऽ त व	त न मेंऽ ऽऽ

अन्तरा

०	३	+	२
ग ग ग ग	प – ध –	सां – सां सां	सां रें सां –
अ न ल छि	पा ऽ है ऽ	ज्यों ऽ अ णु	अ णु में ऽ
ध – ध ध	सां – रें रें	सां रें गं रें	सां ध प –
गं ऽ ध ब	से ऽ प्र ति	पा ऽ र्थि व	क ण में ऽ
गं रें सां रें	रें रें सां ध	पध सां सां सां	पध सां धप गरे
त्यों ऽ मृ ग	म द त व	नाऽ ऽ भि सु	मऽ न मेंऽ ऽऽ

दिव्यगान

[माल कौंस]

गादे गायक ! वह दिव्य गान,
पुलकित हों जिससे विश्व प्राण ।

जागृत हों नभ में दिव्य भाव,
भासे दिशि दिशि पुण्य प्रभाव,
वसुधा मण्डल हो दीप्तिमान्,
गादे गायक ! वह दिव्य-गान ।

* *

पीकर तव नव-सङ्गीत-सुधा,
बन जा यह स्वर्ग-धाम वसुधा,
सर्वत्र उदित हो आत्मज्ञान,
गादे गायक ! वह दिव्य-गान ।

* *

नभ में गुञ्जित हो अमरनाद,
प्राणित हो जग में साम्यवाद,
सब करें प्रेम-पीयूष पान,
गादे गायक ! वह दिव्यगान ।

राग मालकौंस [ओड़व जाति]

[त्रिताल, मात्रा १६, वादी म; संवादी स; समय-रात्रि का ३य प्रहर]

स्थायी

०	३	+	१
			म –
			गा ऽ
ग म ग स	नी सा ध नि	स – म म	– म, म म
दे ऽ गा ऽ	य क व ह	दि ऽ व्य गा	ऽ न, पु ल
ग ग म –	ध ध ध नी	सं गं सं नी	ध म, म –
कि त हों ऽ	जि स से ऽ	वि ऽ श्व प्रा	ऽ ण, गा ऽदे०

अन्तरा

			म –
			जा ऽ
ग ग म –	ध ध नी –	सं – सं सं	– सं, सं –
गृ त हो ऽ	न भ में ऽ	दि ऽ व्य भा	ऽ व, भा ऽ
नी – – –	नी नी ध नी	सं गं सं नी	ध म, म म
से ऽ ऽ ऽ	दि शि दि शि	पु ऽ ण्य प्र	भा व, व सु
मं – गं मं	सं गं नी सं	ध नी म ध	ग म, म –
धा ऽ मं ऽ	ड ल हो ऽ	दी ऽ प्ति मा	ऽ न, गा ऽदे०

नोट—इस राग में 'रे' प वर्ज्य हैं, शेष कोमल स्वर लगते हैं।

मधुमन्त्र

[पीलू कहरवा]

चपल चित ! हो मत व्यर्थ हताश ।
होकर लुप्त तिमिर यह सत्वर*होगा पूर्ण प्रकाश !

अस्थिर यह संसार चक्र है,
कभी सरल है कभी वक्र है,
भिक्षुक कल का आज शक्र × है,
जगत् यह परिवर्तन–इतिहास ।
चपल चित! हो मत व्यर्थ हताश !

आज यदपि पतझड़ दुरन्त है,
कल निश्चय मधु-मधु वसन्त है,
यहाँ न वस्तु कोई अनन्त है,
क्षणिक कटुरुदन, क्षणिक मधुहास ।
चपल चित ! हो मत व्यर्थ हताश!

रहा है कौन सदा परतन्त्र ?
'बनेंगे हम . भी शीघ्र स्वतन्त्र',
जपें जा अविरत यह मधु-मन्त्र,
गगन में होगा विहग-विलास ÷ ।
चपल मन ! हो मत व्यर्थ हताश !

राग, पीलू

[कहरवा, मात्रा १६, समय–दिन का तृतीय प्रहर]

स्थायी

+	०	+	०
			प —
			च ऽ
प ध प म	ग – ग –	स – ग –	म – प –
प ऽ ल ऽ	चि ऽ त ऽ	हो ऽ ऽ ऽ	म ऽ त ऽ
ग – – रे	स नी – –	स – – –	स – प –
व्य ऽ ऽ ऽ	र्थ ह ऽ ऽ	ता ऽ ऽ ऽ	श ऽ, च *
प – ध ध	नी – स स	म ग ग रे	रे स स नि
हो ऽ क र	लु ऽ प्र ति	मि र य ह	स तू व र
स प प म	म ग ग रे	स – – –	स –, प –
हो ऽ गा ऽ	पू ऽ र्ण प्र	का ऽ ऽ ऽ	श ऽ, च ऽ

नोट—जहाँ अन्तरे के पास ऐसा * चिन्ह हो उस अन्तरे को दो-तीन बार बोलना चाहिये।

अन्तरा

+	०	+	०
ग म म म	प प प –	ध – ध ध	प ध म प
अ ऽ स्थि र	य ह सं ऽ	सा ऽ र च	ऽ क्र है ऽ
प सं नी सं	ध नी प ध	प सं नी सं	ध ध प –
क भी ऽ स	र ल है ऽ	क भी ऽ व	ऽ क्र है ऽ
पं गं गं रें	रें सां सां नि	नी ध ध प	प म प, प
भि ऽ क्षु क	क ल का ऽ	आ ऽ ज श	ऽ क्र है, ज
स प प प	प ध प ध	म प ग म	प –, प –
ग त य ह	प रि व ऽ	र्त्त न इ ति	हा स, च ऽ

मधुर-मन्त्र

[बहार त्रिताल]

वीणे ! मधुर-मधुर स्वर दे !
शुभ स्वतन्त्र निज-मधुर-मन्त्रनव,
अणु-अणु में भर दे !
वीणे !

*   *

प्रिय स्वतन्त्रता मन्त्र सिखाकर,
पराधीनता तिमिर भगाकर,
जग में जीवन-ज्योति-जगाकर,
ज्योतिर्मय कर दे !
वीणे !

*   *

एक मन्त्र हो, एक यन्त्र हो,
एक राट् साम्राज्य-तन्त्र हो;
राष्ट्र व्यक्तितः सब स्वतन्त्र हों,
दास्य-भाव हर दे !
वीणे !

राग, बहार

[त्रिताल, मात्रा १६, समय–मध्य रात्रि]

वादी म, संवादी स,

स्थायी

२				०				३				+			
धनी	सांरें	नी	सं	सं	नी	प	म	म	प	ग	म	ध	–	–	नी
वीऽ	ऽऽ	णे	ऽ	म	धु	र	म	धु	र	स्व	र	दे	ऽ	ऽ	ऽ
धनी	संरें	नी	सं	सं	सं	नी	प	–	म	म	प	ग	म	रे	स
वीऽ	ऽऽ	णे	ऽ	शु	भ	स्व	त	ऽ	न्त्र	नि	ज	म	धु	र	मं
–	स	स	स	स	म	म	म	म	प	ग	म	ध	–	ध	नी
ऽ	त्र	न	व	अ	गु	ऽ	अ	गु	ऽ	में	ऽ	भ	र	दे	ऽ

अन्तरा

२	०	३	+
धनी संरें नी सं	म म ध ध	– नी सं सं	सं – सं सं
वीऽ ऽऽ णे ऽ	प्रि य स्व तं	ऽ त्र ता ऽ	मं ऽ त्र सि
सं सं सं सं,	सं मं – मं	रें सं सं सं	नी सं रें सं
खा ऽ क र,	प रा ऽ धी	ऽ न ता ऽ	दू ऽ र भ
नी प म प,	सं सं नी –	प – म प	ग – ग म
गा ऽ क र,	ज ग में ऽ	जी ऽ व न	ज्यो ऽ ति ज
रे – स स,	स म म म	म प ग म	ध – – नी
गा ऽ क र,	ज्यो ऽ ति ऽ	मे य क र	दे ऽ ऽ ऽ

नोट—इस राग में ग कोमल और नी, नी दोनों लगती हैं।

नीरवतान

[राग देश]

कहाँ हुए हो ! अन्तर्धान,
हे मेरे प्रियतम ! भगवान !

अरुण उषा के मधुर हास में,
कोमल-कुड्मल-दल-विकास में,
दिव्य-दिवाकर-कर-प्रकाश में,
भासित है तव मृदु-मुस्कान।

* *

शीतल-सुरभित-मन्द-पवन में,
सर-सरिता-गिरि-वन उपवन में,
सिन्धु-सलिल में, नील-गगन में,
गुञ्जित है तव नीरव-तान।

* *

आयेगा प्रभु ! कब वह प्रिय क्षण,
कब होगा वह मिलन विलक्षण,
जब मिल दिव्य-ज्योति से तत्क्षण,
होगा यह ज्योतिर्मय प्राण।

राग, देश [ओडव संपूर्ण]

[त्रिताल,मात्रा १६, वादी रे; सम्वादी प. समय-रात्रिका २य प्रहर]

स्थायी

३	+	२	०
स रे म प	नी सं रें सं	नी ध प म	ग रे ग स
क हाँ ऽ हु	ए ऽ हो ऽ	अ ऽ न्त र्	धा ऽ ऽ न
रे – रे प	प म म ग	ग रे रे ग	सरे ग स –
हे ऽ मे ऽ	रे ऽ प्रि य	त म भ ग	वाऽ ऽ ऽ न

अन्तरा

३	+	२	०
म – म म	प – नी –	प नी सं नी	सं रें नी सं
अ रु ण उ	षा ऽ के ऽ	म धु र हा	ऽ स में ऽ
प – नी ध	प – म ग	रे प म ग	रे ग स –
को ऽ म ल	कु ऽ ड्म ल	द ल वि का	ऽ स में ऽ
मं – रें गं	सं – नी सं	नी सं रें सं	नी ध प –
दि ऽ व्य दि	वा ऽ क र	क र प्र का	ऽ श में ऽ
स रे म प	नी सं रें सं	नी ध प म	गरे – – –
भा ऽ सि त	है ऽ त व	मृ दु मु स्	काऽ ऽ ऽ न

नोट—इस राग में दोनों निषाद लगते हैं।

वीरगान

[राग भूपाली]

वीरो ! वीरगान मिल गाओ !
भरत-भूमि के भव्य भवन में,
जीवन ज्योति जगाओ ।

वीर बली बन निर्मम निर्भय,
प्रेम-प्रसून करो नित सञ्चय,
कर स्वतन्त्र निज राष्ट्र अशंसय,
अक्षय कीर्ति कमाओ ।

वीरो ! वीरगान मिल गाओ ।

* *

वेदों का सन्देश सुनाकर,
वैदिक-नाद बजादो घर घर,
जग को स्वर्गागार बनाकर,
शान्ति-सुधा बरसाओ ।

वीरो ! वीरगान मिल गाओ ।

राग, भूपाली

[त्रिताल, मात्रा १६, समय, रात्रि का प्रथम प्रहर]

वादी 'ग', सम्वादी 'ध'

स्थायी

०				३				+				२			
सं	–	ध	प	ग	रे	स	रे	प	–	ग	–	ध	–	प	–
वी	ऽ	र	ग	ऽ	न	मि	ल	ग	ऽ	ओ	ऽ	वी	ऽ	रो	ऽ
ध़	स	रे	ध़	स	रे	ध़	स	प	–	ग	रे	स	रे	स॰	–
भा	र	त	भू	ऽ	मि	के	ऽ	भ	ऽ	व्य	भ	व	न	में	ऽ
सं	–	ध	प	ग	–	स	रे	प	–	ग	–	ध	–	प	–
जी	ऽ	व	न	ज्यो	ऽ	ति	ज	गा	ऽ	ओ	ऽ	वी	ऽ	रो	ऽ

नोट—इस राग में म, नि वर्ज्य है।

अन्तरा

०				३				+				२			
प	-	ग	ग	प	-	ध	प	सं	-	सं	सं	सं	रें	सं	-
वी	ऽ	र	ब	ली	ऽ	ब	न	नि	ऽ	र्म	म	नि	ऽ	र्भ	य
प	-	ध	ध	सं	-	ध	सं	रें	गं	सं	रें	ध	सं	प	ध
प्रे	ऽ	म	प्र	सू	ऽ	न	क	रो	ऽ	नि	त	सं	ऽ	च	य
ध़	स	स	स	-	स	स	रे	ग	-	प	ग	रे	-	स	स
क	र	ख	तं	ऽ	त्र	नि	ज	रा	ऽ	ष्ट्र	अ	सं	ऽ	श	य
स	रे	ग	प	ध	ग	प	ध	सारे	गप	धसं	रेंगं	रेंसं	धप	गरे	सस
अ	ऽ	न्न	य	की	ऽ	र्ति	क	माऽ	ऽऽ	ओऽ	ऽऽ	वीऽ	ऽऽ	रोऽ	ऽऽ

नोट—पहले स्वराभ्यास करिये पीछे गाइये।

कब ?

[जय जयवन्ती]

देव ! बनूँगा कब मैं तेरे,
मानस-सर का मंजु-मराल ।
कब पाऊँगा नाथ ! अमरफल,
नन्दनवन का मधुर-रसाल ॥

* *

शान्तिमयी जीवन की वेला,
कब आयेगी प्रेमागार ।
जब इस मन-मन्दिर में होगा,
तेरा ज्योतिर्मय संचार ॥

* *

तेरी दिव्य वेद-वीणा की,
होगी कब नीरव-झङ्कार ।
जिससे ये प्रति-झंकृत होंगे,
मेरी हृत्तन्त्री के तार ॥

* *

तेरे मञ्जुल तेजं-पुञ्ज से,
प्रतिबिम्बित हो मेरे प्राण ।
कब पायेंगे देव ! सुदुर्लभ,
अमर-शान्ति-निर्झर-निर्वाण ॥

राग, यमन कल्याण

[ताल—कहरवा, समय रात्रि का प्रथम प्रहर]

स्थायी

+	०	+	०
सं - सं सं	सं - सं रें	नी नी नी -	ध - ध -
दे ऽ व ब	नूं ऽ गा ऽ	क ब मैं ऽ	ते ऽ रे ऽ
प - प प	प प नी ध	प - म॑ प	ग - - -
मा ऽ न स	स र का ऽ	मं ऽ जु म	रा ऽ ऽ ल
रे ग रे ग	ग - म ग	रे - ग रे	स ऩी स -
क ब पा ऽ	ऊँ ऽ गा ऽ	ना ऽ थ अ	म र फ ल
रे - ग ग	ग - मैं ग	रें ग रेग प	प - - प
नं ऽ द न	व न का ऽ	म धु रऽ र	सा ऽ ऽ ल

अन्तरा

+	०	+	०
ग – प प	प – ध प	सं सं सं –	सं – सं –
शां ऽ ति म	यी ऽ जी ऽ	व न की ऽ	वे ऽ ला ऽ
ध ध नी –	सं – रें –	सं रें सं गं	गं – – –
क ब आ ऽ	ये ऽ गी ऽ	प्रे ऽ मा ऽ	गा ऽ ऽ र
पं पं पं पं	पं मं पं –	गं गं गं –	रें – रें –
ज ब ह स	म न मं ऽ	दि र में ऽ	हो ऽ गा ऽ
नी – नी –	नी – सं नी	ध नी धं रें	सं – – –
ते ऽ रा ऽ	ज्यो ऽ ति ऽ	मे य सं ऽ	चा ऽ ऽ र

हृद्वीणा

झङ्कार ८

[राग विहाग तीव्रा]

हे देव ! मञ्जुल वेद-वीणा की मधुर झङ्कार हो,
प्रभु! दिव्य वैदिक-धर्म का सर्वत्र जय-जयकार हो।

राष्ट्र सब बन्धुत्व की,
प्रिय-भावना में बद्ध हों;
रण-चण्डिका ताण्डव न हो,
भय रहित अब संसार हो।

* *

फिर व्योम में शुभ ओम् ध्वज,
विश्वेश ! फहराने लगे;
विभु ! विश्व में सुख शान्ति-
दिव्यानन्द का सञ्चार हो।

* *

हों दिव्य ही जीवन हमारे,
दिव्य ही सब कार्य हों;
प्रभु ! दिव्यता से पूर्ण सब,
पारस्परिक-व्यवहार हों।

राग-विहाग

[तीव्रा, मात्रा ७. समय-रात्रि का २य प्रहर]

स्थायी

३	+	२	३	+	२
स नि़	स - ग	प -	नी नी	सं - नी	प -
हे ऽ	दे ऽ व	मं ऽ	जु ल	वे ऽ द	वी ऽ
मं प	ग - ग	प मं	प -	ग - म	ग -
णा ऽ	की ऽ म	धु र	झं ऽ	का ऽ र	हो ऽ

अन्तरा

३	+	२	३	+	२
नी़ -	प़ प़	नी़ नी़	स -	प - मं	ग म
हों ऽ	वि ऽ प्र	व र	वे ऽ	द ऽ ज्ञ	त्त ऽ
ग -	प - नी	नी -	नी सं	नी सं नी	प मं
त्रियऽ	वी ऽ र	ते ऽ	ज ऽ	स्वो ऽ ब	नें ऽ
सं सं	गं - गं	सं -	नी प	नी सं नी	प -
वि ट्	हों ऽ ध	नी ऽ	ध न	धा ऽ न्य	पू ऽ
ग म	ग म	नी सं	गं रें	सं नी ध	प मं
रि त	रा ऽ ष्ट्र	का ऽ	भं ऽ	डा ऽ र	हो ऽ

आवाहन

[मिश्र भैरवी]

मन-मन्दिर में आवो प्रभु !
अपनी ज्योति जगाओ।

तुम हो घट-घट के अधिवासी,
अजर, अमर, अविचल, अविनाशी;
मैं प्रभु ! दर्शन का अभिलाषी,
झिलमिल झलक दिखाओ।
प्रभु ! मन-मन्दिर में आओ।

× ×

आँख मिचोनी अब मत खेलो,
भक्ति-भेट अपनी यह लेलो,
इतना कष्ट भक्त हित झेलो;
करुणाकर ! अपनाओ।
प्रभु ! मन-मन्दिर में आओ।

मिश्र भैरवी

[कहरवा, समय—प्रातःकाल]

स्थायी

×				०				+				०			
स	प	प	प	प	ध	प	म	स	म	स	म	गम	पध	ग	म
म	न	मं	ऽ	दि	र	में	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	प्र	भु
ग	रे	नी	-	स	रे	ग	म	रे	ग	सनि	स	-	-	-	-
अ	प	नी	ऽ	ज्यो	ऽ	ति	ज	गा	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

सं	सं	सं	-	नी	सं	नीध	पम	म	प	ध	नी	ध	प	प	-
तु	म	हो	ऽ	घ	ट	घऽ	टऽ	के	ऽ	अ	धि	वा	ऽ	सी	ऽ
सं	सं	सं	सं	संरें	संगं	रेंसं	नीसं	पध	नीसं	रेंग	रेंसं	नीध	पम	पध	प
अ	ज	र	अ	म	र	अ	वि	च	ल	अ	वि	ना	ऽ	शी	ऽ
गंरें	संनि	रेंसं	नीध	संनी	धप	नीध	पम	धप	मग	पम	गरे	मग	रेस	गरे	सनि
मैं	ऽ	प्र	भु	द	ऽ	र्श	न	का	ऽ	अ	भि	ला	ऽ	षी	ऽ
स	प	प	प	प	ध	प	म	स	म	स	म	गम	पध	ग	म
झि	ल	मि	ल	झ	ल	क	दि	खा	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	प्र	भु

नोट—अन्तरेकी ३री, ४री पंक्ति पहिली पंक्तिके समान भी बजा सकतेहैं ।

जीवनगान

[राग-आसावरी]

गाने दो अब तो गाने दो,
नव-जीवन-गान सुना दो।
अपने मधुर विकम्पित स्वर से,
जीवन-ज्योति जगाने दो ॥

स्नेह-सुहृदता मानवता का,
मधुर-अमृत बरसाने दो।
जग की उजड़ी कुसुम-वाटिका,
को फिर से सरसाने दो ॥

व्यक्ति-राष्ट्र-गत राग-द्वेष के,
विष-अङ्कुर मुरझाने दो।
विश्व-प्रेम की मधुर-सुधा से,
हृदय-सुमन भर जाने दो ॥

भौतिक-बल-मद-मुग्ध जगत् की
उलझन को सुलझाने दो।
वैदिक-सार्वभौम-संस्कृति का
प्रियतम पाठ पढ़ाने दो ॥

आर्य-जाति की जागरूक-
सन्तति में जीवन आने दो।
लुप्त हुई स्वातन्त्र्य-सम्पदा,
इसे पुनः पा जाने दो ॥

राग, आसावरी [औडव संपूर्ण]

[त्रिताल, मात्रा १६, समय–प्रातःकाल]

वादी ध, संवादी ग. सुरग्रह म, न्यास प.

स्थायी

०	३	+	२
			स –
			गा ऽ
रे – म –	प प सं –	नीध – प –	प – प ध
ने ऽ दो ऽ	अ ब तो ऽ	गाऽ ऽ ने ऽ	दो ऽ, न व
म – म प	ध – म प	ग – रे –	स – स –
जी ऽ व न	गा ऽ न सु	ना ऽ ने ऽ	दो ऽ गा ऽ
रे रे स –	ध प प ध	म – प प	नी – स –
अ प ने ऽ	म धु र वि	कं ऽ पि त	स्व र से ऽ
रे ऽ म म	प – सं सं	ध – प म	ग – स स
जी ऽ व न	ज्यो ऽ ति ज	गा ऽ ने ऽ	दो ऽ, गा ऽ

अन्तरा

०	३	+	२
प – म म	प प ध –	सं – सं सं	रें नि सं –
स्ने ऽ ह सु	हृ द ता ऽ	मा ऽ न व	ता ऽ का ऽ
नी नी नी नी	सं रें गं रें	सं रें नी सं	नीध प – –
मं धु र अ	मृ त व र	सा ऽ ने ऽ	दोऽ ऽ ऽ ऽ
प प गं –	सं रें नी सं	ध नी प ध	म प प –
ज ग की ऽ	उ ज ड़ी ऽ	कु सु म वा	ऽ टि का ऽ
म – म म	प – सं सं	सं नी ध प	म ग, रे सा
को ऽ फि र	से ऽ स र	सा ऽ ने ऽ	दो ऽ, गा ऽ

झलक

[बागेश्वरी]

हे देव ! दीनबन्धो !
तुम शक्ति के सदन हो ।
करुणा-निधानप्रभु ! तुम,
अशरण-शरण-शरणहो ॥

सृष्टि-स्थिति-प्रलय के,
हे सूत्रधार ! स्वामिन् !
हो निर्बलों के बल तुम,
प्रभु निर्धनों के धन हो ॥

भक्तों के त्राण-कर्त्ता,
दीनों के दुःख-हर्त्ता ।
श्रुति-धर्म के प्रवर्त्तक,
प्रभु ! दुष्ट-दल-दमन हो ॥

चञ्चल, चपल, चितेरा,
हे नाथ ! चित्त मेरा ।
यदि है चकोर तो तुम,
प्रभु ! चन्द्र-हिम-किरण हो ॥

दिन-रात कामना के,
कान्तार में भटकता।
मन है मिलिन्द तो तुम,
प्रभु! कल्पतरु-सुमन हो॥
आनन्द-विन्दु-लोलुप,
यदि हास्य-लास्य करता।
है मन-मयूर तो तुम,
आनन्द-वारि-घन हो॥

आनन्द कन्द अब तो।
अन्तिम झलक दिखादो।
मैं तो पतंग होऊँ,
तुम ज्योतिमय-तपन हो॥

तिलक कामोद

[दादरा. वादी रे; सम्वादी प. समय–रात्रिका २य प्रहर]

×			०			×			०		
										स	म
										हे	ऽ
रे	ग	रे	रे	प	म	रे	ग	रे	स	नी़	नी़
दे	ऽ	व	दी	ऽ	न	बं	ऽ	धो	ऽ	तु	म
प़	नी़	नी़	नी़	स	स	रे	ग	नी़	–,	स	स
श	ऽ	क्ति	के	ऽ	स	द	न	हो	ऽ,	सु	ऽ
रे	–	म	म	प	प	नी	सं	सं	–	नी	सं
ष्टि	ऽ	स्थि	ति	ऽ	प्र	ल	य	के	ऽ	हे	ऽ
रें	पं	मं	गं	रें	सं	नी	रें	सं	–,	प	प
सू	ऽ	त्र	धा	ऽ	र	स्वा	ऽ	मिन्	ऽ,	हो	ऽ
प	–	सं	ध	नी	ध़	प	ध	प	म	ग	रे
नि	ऽ	र्ब	लों	ऽ	के	ब	ल	तु	म,	प्र	भु
रे	प	प	म	–	ग	रे	रे	स	–,	स	स
नि	ऽ	र्ध	नों	ऽ	के	ध	न	हो	ऽ,	हे	ऽ

नोट—इस राग में दोनों निषाद लगते हैं।

विभ्रम

[राग मिश्र]

नैया किस विध पार लगेगी।

विघ्न-वारिधि-क्षुब्ध हुआ है,
*नाविक मदिरा-मुग्ध हुआ है;
इस प्रचण्ड ÷ झञ्झा में किस विध,
पथ-प्रदर्शिका ज्योति जगेगी।

*　　　　*

छाया नभ में तिमिर अन्धतम,
तिस पर हुआ भयङ्कर दिग्भ्रम;
जीवन-नौका चली वायु-सम,
किस विध यह आपदा टलेगी।

*　　　　*

प्रलयङ्कर यह घन-गर्जन है,
चञ्चल ×चपला का तर्जन है,
साक्षात् महा-प्रलय-सर्जन है,
किस विध अब प्रभु !'दाल गलेगी'।

*　　　　*

रक्षक जब तव जगदीश्वर है,
फिर कैसा भय कैसा डर है,
क्षुद्र कूप संसृति-सागर है,
नैय्या निश्चय पार लगेगी।
नैय्या किस विध पार लगेगी।

---

* मल्लाह　÷ आंधी　× विद्युत्

राग, मिश्र

[ताल-कहरवा. रे, ध, दोनों, ग कोमल. मात्रा ८]

स्थायी

+				०				×				०			
ग	-	प	म	रे	ग	स	रे	स	-	ग	ग	म	-	म	ग
ने	ऽ	या	ऽ	कि	स	वि	ध	पा	ऽ	र	ल	गे	ऽ	गी	ऽ
स	-	ग	-	स	ग	म	प	ध	-	म	प	ग	म	-	-
नै	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

जोड़ (१)

स	प	प	प	प	ध	मप	ध	ग	-	प	म	ग	रे	स	-
वि	ऽ	घ्न	बा	ऽ	रि	धिऽ	ऽ	जु	ऽ	ध्य	हु	आ	ऽ	है	ऽ
म	-	ध	ध	ध	नी	नी	-	ध	-	नी	सं	ध	-	प	म
ना	ऽ	वि	क	म	दि	रा	ऽ	मु	ऽ	ग्ध	हु	आ	ऽ	है	ऽ
सं	सं	सं	सं	-	सं	गं	-	सं	-	सं	-	नी	ध	नी	नी
इ	स	प्र	पं	ऽ	ह	भं	ऽ	भा	ऽ	में	ऽ	कि	स	वि	ध
म	ध	ध	ध	-	नी	नी	-	धनी	धनी	धनी	धनी	धनी	संनी	धप	म
प	थ	प्र	द	ऽ	शिं	का	ऽ	ज्योऽ	ऽऽ	तिऽ	जऽ	गोऽ	ऽऽ	गोऽ	ऽ

जोड़ [२]

+	०	+	०
ग ग म –	ध धनी –	नी संधध	नी नी नी नी
छा ऽ या ऽ	न भ में ऽ	ति मि र अं	ऽ ध त म
सं – सं सं	सं रें संरें गं	गं – सं रें	ध – नी नी
तिस ऽ प र	हु आ ऽऽ भ	यं ऽ क र	दि ऽ भ्र म
गं – गं गं	रें – सं –	नी ध ध ध	नी नी नी नी
जी ऽ व न	नौ ऽ का ऽ	च ली ऽ वा	ऽ यु स म
म – ध ध	ध नी ध नी	ध नी – नी	धनी संनी धप म
किस ऽ धि ध	य ह आ ऽ	प दा ऽ ट	लेऽ ऽऽ गीऽ ऽ

मोहकतान

[कजरी]

वीणे ! ऐसी आज सुनादे,
मृदु-मङ्गलमय मोहक-तान ॥

जिससे हृदय-कमल खिल जायं
पुलकित हों तन प्राण ।

अभिनव-जीवन-ज्योति जगादे,
अन्धकार को दूर भगादे,

सकल-विश्व को स्वर्ग बनाकर
करा सुधा-रस पान ॥

राग, कजरी

[कहरवा, मात्रा ८]

स्थायी

०	+	०	+
रे - ऩी स	ग - ग -	ग म प ध	ग म ग प
वी ऽ णे ऽ	ऐ ऽ सी ऽ	आ ऽ ज सु	ना ऽ दे ऽ
म ग रे -	रे ग रे म	ग रे ऩी सा	रे - - -
म धु म य	मं ऽ ग ल	मो ऽ ह क	ता ऽ ऽ न
	म॑ म॑ म॑ -	म॑ म॑ म॑ म॑	प प प -
वी ऽ णे ऽ	जि स से ऽ	हृ द य क	म ल खि ल
प - प -	रे रे म॑ म॑	म॑ प ध ध	प - - म
जा ऽ यें ऽ	पु ल कि त	हों ऽ त न	प्रा ऽ ऽ ण

अन्तरा

०	+	०	+
	रे रे म॑ –	म॑ – म॑ म॑	प – प प
वी ऽ णे ऽ	अ भि न व	जी ऽ व न	ज्यो ऽ ति अ
म॑ प म॑ प	म॑ प ध ध	ध नी॒ प ध	म॑ प ध प
गा ऽ दे ऽ	अं ऽ ध का	ऽ र को ऽ	दू ऽ ऽ भ
म ग रे रे	रे ध ध ध	ध नी॒ नी॒ सं	ध नी॒ ध नी॒
गा ऽ दे ऽ	स क ल वि	ऽ श्व को ऽ	श्रे ऽ ष्ठ ब
प ध म॑ प	रे म॑ – म	म॑ प ध ध	प – – म
ना ऽ क र	क रो ऽ सु	धा ऽ र स	पा ऽ ऽ न

मधुमङ्कार

सुनादे वीणे ! मधुझङ्कार।
गूँज उठें जिससे ये मानव-
हृत्तन्त्री के तार॥
वैर-विरोध-विषाक्त-वह्नि पर,
बरसे तीव्र तुषार।
प्रेम-पुण्य-पीयूष पियें,
हो नव-जीवन सञ्चार॥
सुनादे वीणे ! मधुझङ्कार॥
भेद-भाव को तजें तथा
सब भिन्न-भिन्न व्यवहार।
राग अलापें प्रिय-समता के,
मानस - मधुर - सितार॥
सुनादे वीणे ! मधुझङ्कार॥
आलस, मद-मात्सर्य स्वार्थ को,
हो शत - शत धिक्कार।
वीर बनें स्वातन्त्र्य-युद्ध के,
कर्म-योग व्रत धार॥
सुनादे, वीणे ! मधुझङ्कार॥
कर कर-गत गत-गौरव को हम,
बनें स्वतन्त्र उदार।
चक्रवर्ति साम्राज्य एक हो,
संसृति हो परिवार॥
सुनादे वीणे ! मधुझङ्कार॥

राग, सारंग [औड़व]

[त्रिताल, वादी रे; सम्वादी प; ग, ध वर्ज्य. समय—मध्य दिवस]

२	०	३	+
			रे सु
रे म रे प	म रे स –	स स नी स	रे – रे, रे
ना ऽ दे ऽ	वी ऽ णे ऽ	म धु झं ऽ	का ऽ र, सु
रे म रे प	प – नी स	रे – नी स	रे म रे प
ना ऽ दे ऽ	गूँ ऽ ज उ	ठे ऽ जि स	से ऽ ये ऽ
म रे स स	रे म प –	नी सं रें सं	नी प म, रे
मा ऽ न व	हृ ऽ त्तं ऽ	त्री ऽ के ऽ	ता ऽ र, सु
ना ऽ दे ऽ	वी ऽ णे ऽ	म धु झं ऽ	म म प म वै र वि रो
प नी सं सं	– सं सं रें	नि सं सं सं	मं मं रें रें
ऽ ध वि षा	ऽ क्त व ऽ	ह्लि प र ब	र से ऽ ती
मं नी सं नी	म प, प सं	नी म प रे	म स रे रे
ऽ भ्र तु षा	ऽ र, प्रे म	पु ऽ ण्य पी	ऽ यू ष पि
प नी सं ऽ	मं रें सं नी	प म रे –	मप नीसं नीप मरे
यें ऽ हो ऽ	न व जी ऽ	व न सं ऽ	चाऽ ऽऽ र, सु

जागरण

[राग-तिलंग]

मधु-मधुरणन-प्रवीणे वीणे !
गादे मधु-मधु गान ।
हृदय-गगन में भरदे मेरे,
नव-जीवन नव-प्राण ॥

वीर-भावयुत विद्युत भरदे,
अणु-अणु को ज्योतिर्मय करदे,
सप्त-किरण-जागरण स्वर दे,
जगे आत्म-सम्मान ।
वीणे ! गादे मधु-मधु गान ॥

प्रिय-स्वतन्त्रता-ज्योति जगादे,
पराधीनता-तिमिर भगादे,
जग को समता-शिविर बनादे,
मिले दिव्य-वरदान ।
वीणे ! गादे मधु-मधु गान ॥

हिम-हेमन्त-अन्त द्रुत आवे,
वर-वसन्त निज साज सजावे,
स्नेह-सुधा दिशि-दिशि बरसावे,
होजावे कल्याण ।
वीणे ! गादे मधु-मधु गान ॥

राग, तिलंग

[त्रिताल, मात्रा १६,]

स्थायी

०				३				+				२			
ग	म	प	नि	सां	नि	प	म	ग	म	नि	प	ग	म	ग	–
म	धु	म	धु	र	ण	न	प्र	वी	ऽ	णे	ऽ	वी	ऽ	णे	ऽ
नि	सा	ग	म	प	प	नि	सां	पनि	सां	नि	प	नि	प	म	ग
गा	ऽ	दे	ऽ	सु	म	धु	र	गाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न,
ग	म	प	नि	सां	सां	सां	–	सां	सां	गं	–	सां	नि	प	म
हृ	द	य	ग	ग	न	में	ऽ	भ	र	दे	ऽ	मे	ऽ	रे	ऽ,
म	म	प	–	नी	नी	सां	सां	पनि	सांरें	सांनि	पम	गम	निप	निप	मग
न	व	जी	ऽ	व	न	न	व	प्राऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	णऽ

अन्तरा

०	३	+	२
ग म प नि	सां सां सां सां	प नि सां रें	नी सां नि प
धी ऽ र भा	ऽ व यु त	वि ऽ द्यु त	भ र दे ऽ
म म ग म	प – नि –	सां – सां रें	नि सां नि प
अ णु अ णु	को ऽ ज्यो ऽ	ति ऽ र्म य	क र दे ऽ
नि – सां सां	गं मं गं –	नि नि सां –	नि सां नि प
स ऽ प्र कि	र णा जा ऽ	ग र ण ऽ	स्व र दे ऽ
ग म – प	– प नी –	पनि सांरें सांरें सांनि	पनि सांनि पम गम
ज गे ऽ आ	ऽ त्म सं ऽ	गाऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ नऽ

नोट—इस राग में धैवत वर्ज्य है एवं दोनों निषाद लगते हैं।

आशा

न फली किसी की आशा,
हृदय की पिपासा...आशा।

राव रङ्क सारे, आशा-कशा के मारे।
सब चल बसे बिचारे, अजब है तमाशा॥
आशा...आशा,

न फली किसी की आशा,
हृदय की पिपासा...आशा।

नोट—यह गायन ललितकलादर्श के मालिक श्री. बापू पेंढारकर द्वारा १९३५ में हिज मास्टर्स वॉयस कम्पनी द्वारा रिकार्ड में भरा जा चुका है।

वसन्त

[राग बहार]

मधु मधु वसन्त आया है ।
मृदु मुद अनन्त लाया है ॥

मधु मधुर धीर,
शीतल समीर,
सुरभित सुवास,
मृदु-कुसुम हास,

हाँ अणु अणु में छाया है ।
मधु मधु वसन्त आया है ॥

विकचारविन्द ,
मधु मधु मरन्द,
पी पी मिलन्द,
प्रमुदित अमन्द-

हो विजय-गान गाया है ।
मधु मधु वसन्त आया है ॥

जग हो स्वतन्त्र,
हो एक तन्त्र,
सब राज-यन्त्र
मधु-मधुर मन्त्र,

यह सार्वभौम लाया है ।
मधु मधु वसन्त आया है ॥

राग—बहार

[त्रिताल, मात्रा १६]

स्थायी

+	०	+	०
			ध नी म धु
सं नी ध प	म प ग म	ध – – नी	धनी सं, ध नी
म धु ब सं	ऽ त आ ऽ	या ऽ ऽ ऽ	हैऽ ऽ, मृ दु
गं गं गं गं	रें सं नी सं	ध – – नी	धनी सं, ध नी
मु द अ न	ऽ न्त ला ऽ	या ऽ ऽ ऽ	हैऽ ऽ, म धु

अन्तरा

ध ध ध नी	सं सं सं –	नी सं रें सं	नी सं, सं सं
म धु र धी	ऽ र, शी ऽ	त ल स मी	ऽ र, सु र
सं गं गं गं	– गं, रें रें	नी सं ध नी	सं सं, सं –
भि त सु वा	ऽ स, मृ दु	कु सु म छा	ऽ स, हाँ ऽ
स ग म प	प – ग म	ध – ध नी	धनी सं, ध नी
अ णु अ णु	में ऽ छा ऽ	या ऽ ऽ ऽ	हैऽ ऽ, म धु

नोट—इस राग में सब शुद्ध स्वर लगे हैं।

हृद्वीणा

वीणा

[धानी]

मधु-मधु राग बजादे वीणे !
मधु-मधु राग०
चिर-प्रसुप्त इस भरत भूमि में,जीवन-ज्योति जगादे वीणे !
मधु-मधु राग०
भेद भगादे स्नेह सिखादे,
आशामय सन्देश सुनादे,
विश्व-व्यापि स्वर्गीय शान्ति का, अनुपम-राग सुनादे वीणे !
मधु-मधु राग०
वीर बनादे धीर बनादे,
शुभ स्वतन्त्रा-मन्त्र बतादे,
विश्व-बन्धुता विश्व-प्रेम का, सुन्दर-साज सजादे वीणे !
मधु-मधु राग०
दास्य मिटादे, दैन्य हटादे,
प्रेमानल दिशि-दिश सिलगादे,
पान कराके साम्यामृत का, जग स्वाधीन बनादे वीणे !
मधु-मधु राग०
एक मन्त्र हो एक यन्त्र हो,
एक छत्र सब राजतन्त्र हो,
विश्व-गगन में अमर-शान्ति का, वैदिक-नाद गुँजादे वीणे !
मधु-मधु राग०

राग, धानी [ओड़व]

[त्रिताल, मात्रा १६. रे, ध वर्ज्य. समय-........]

३	+	२	०
ग म नी प	सं नी प म	गम पम गस नीस	ग - म -
म धु म धु	रा ऽ ग ब	जाऽ ऽऽ देऽ ऽऽ	वी ऽ णे ऽ
प ग ग म	- ग म प	नी प नी सं	- सं सं -
चि र प्र सु	ऽ म इ स	भ र त भू	ऽ मि में ऽ
नी स ग म	गम पनी संनी पम	गम पम गस नीसा	ग - - म
जी ऽ व न	ज्योऽ ऽऽ तिऽ जऽ	गाऽ ऽऽ देऽ ऽऽ	वी ऽ ऽ णे
प - ग ग	ग - म प	नी - प नी	सं - सं -
भे ऽ द भ	गा ऽ दे ऽ	स्ने ऽ ह सि	खा ऽ दे ऽ
सं - नि स	गं गं गं -	गं - मं गं	सं नी सं -
आ ऽ शा ऽ	म य स ऽ	न्दे ऽ श सु	ना ऽ दे ऽ
ग म नी प	सं नी प म	ग - म प	ग स स -
वि ऽ श्व व्या	ऽ पि स्व ऽ	र्गी ऽ य शा	ऽ न्ति का ऽ
नी स ग म	गम पनी संनी पम	गम पभ गस नीस	ग - - म
अ नु प म	राऽ ऽऽ गऽ सुऽ	नाऽ ऽऽ देऽ ऽऽ	वी ऽ ऽ णे

निर्झर

[आसावरी]

अब भी चेत-चेत प्रिय-प्राणी ।
दुनिया तो दीवानी ॥

म न-मोहनी के छल बल में,
चञ्चल चपला के अञ्चल में,
मायिक-ममता के शत-दल में,
मत भटके अज्ञानी ॥

* *

शान्ति-सुधा की यहाँ न गति है,
भोग विलास, क्षणिक-व्यापृति है,
यह तो मायामय-संसृति है,
मृग-तृष्णा का पानी ॥

* *

बहे दिव्य ज्योतिर्मय निर्झर,
भरा हुआ आनन्द-सरोवर,
क्यों न मूढ़ इसमें मज्जन कर,
बन जा तत्व-ज्ञानी ॥

राग–आसावरी [ओड़व संपूर्ण]

[त्रिताल, मात्रा . १६, वादी–ध, संवादी ग. समय–प्रातःकाल]

स्थायी

२	०	३	×
म म प सं	ध प पध मप	ग रे म म	ध – प –
अ ब भी ऽ	चे ऽ तऽ चेऽ	ऽ त प्रि य	प्रा ऽ णी ऽ
– – म म	प – ध –प	सं – सं –	संनी धप मग रेस
ऽ ऽ दु नि	या ऽ तो ऽऽ	ऽ ऽ दी ऽ	वाऽ ऽऽ नीऽ ऽऽ
म म प सं	प म प प	ध ध नी –	सं सं – सं
अ ब भी ऽ	म द न मो	ऽ ह नी ऽ	के ऽ छ ल
रें नी सं –	ध – नी नी	सं रें संरें ग	सं रें नी सं
ब ल में ऽ	चं ऽ च ल	च प लाऽ ऽ	के ऽ अं ऽ
ध नी प –	प – गं गं	रें गं सं रें	नी सं ध नी
च ल में ऽ	मा ऽ यि क	म म तो ऽ	के ऽ श त
प ध म प	स रे म रे	म प ध प	गंरे सांनी धप म
द ल में ऽ	म त भ ट	के ऽ अ ऽ	झाऽ ऽऽ नीऽ ऽ

नोट—शेष अन्तरे भी इसी प्रकार बजेंगे ।

छवि

[कलिंगड़ा]

दिशि-दिशि ज्योति समाई तेरी ।
अणु-अणु में छवि छाई तेरी ॥

ज्वालामुखी – प्रचण्ड लटा में,
तडित–लतायुत–श्याम घटा में,
देती दमक दिखाई तेरी ॥

* *

कलनिनादिनी तरल – तरङ्गा,
अमृत – वाहिनी यमुना, गङ्गा,
गाती नित्य बड़ाई तेरी ॥

* *

रवि–शशि नभ मण्डल के तारे,
झिलमिल–झिलमिल करते सारे,
गाते सतत बधाई तेरी ॥

राग, कलिंगड़ा

[त्रिताल, मात्रा १६ वादी ध, संवादी ग; समय–शेष रात्रि]

स्थायी

०	२	+	३
ध ध ध ध	पध पध म म	ग – ग म	प – ग म
दि शि दि शि	ज्योऽ ऽऽ ति स	मा ऽ ई ते	री ऽ प्र भु
पध पध पध पध	पसं संनी नीध धप	पध पनी धप मग	प – – –
दिऽ शिऽ दिऽ शिऽ	ज्योऽ ऽऽ तिऽ सऽ	माऽ ईऽ ईऽ तेऽ	री ऽ ऽ ऽ
ग – ग –	म – म म	ग – मग रे	स – ग म
अ णु अ णु	में ऽ छ बि	छा ऽ ईऽ ते	री ऽ प्र भु

अन्तरा

म – ग म	प प – प	प ध नी नी	सं – सं –
ज्वा ऽ ला ऽ	मु खी ऽ ऽ	प्र चं ड ल	टा ऽ में ऽ
नी सं सं सं	नी – सं सं	नी सं रें सं	नी सं ध प
व ड़ि त स	ता ऽ यू त	श्यो ऽ म घ	टा ऽ में ऽ
ग म प ध	नी सं रें सं	नी ध प म	ग रे स –
दे ऽ ती ऽ	द म क दि	खा ऽ ई ऽ	ते ऽ री ऽ

नोट— इस राग में रे ध कोमल लगते हैं।

मधु

[राग आशा]

चलो अब चलें सखे ! उस पार,
बसा है जहाँ स्वर्ण-संसार ।

सुधामय-शीतल-धीर-समीर,
निरन्तर बहे अमृत-मय नीर,
जहाँ जाने को चित्त अधीर,
मिलेगा जहाँ प्रेम-परिवार । चलो०

न देखा गया जहाँ छल-छद्म,
बने सर्वत्र स्नेह-मय सद्म,
खिले हैं पुण्य-प्रेममय-पद्म,
नहीं कुछ 'हम' 'तुम' का व्यवहार । चलो०

रुदन है वहाँ न करुणा-गान,
न है अपमान मान का ध्यान,
भरा है नव-जीवन, नव-प्राण,
निभृत है जहाँ सकल सुख-सार । चलो०

रहेंगे वहीं सदा स्वच्छन्द,
पियेंगे मधुर-अमृत सानन्द,
मिटेंगे सभी जहाँ दुःख द्वन्द्व,
मिलेगा दिव्यानन्द अपार । चलो०

राग, आशा

[त्रिताल, मात्रा १६. समय प्रातः

२	०	३	×
			स
			च
स - स स	रे म - म	प - ध ध	सं - सं नी
लो ऽ अ ब	च लें ऽ स	खे ऽ उ स	पा ऽ र ब
ध नी प ध	म प ध नी	प ध म प	नीध पम गरे, स
सा ऽ है ऽ	ज हाँ ऽ स्व	ऽ र्ग सं ऽ	साऽ ऽऽ रऽ, सु
म - म म	प - प ध	सं - सं सं	सं नी ध ध
धा ऽ म य	शी ऽ त ल	धी ऽ र स	मी ऽ र, नि
सं - सं रें	सं रें गं -	सं नी ध प	मप ध ध, ध
र ऽ न्त र	ब हे अ ऽ	मृ त म य	नीऽ ऽ र, ज
प ध म प	ध - सं -	ध नी म प	ध - -, ध
हां ऽ जा ऽ	ने ऽ को ऽ	चि त अ ऽ	धी ऽ र, मि
प ध म प	ध सं नी ध	प म ग रे	रे - - स
ले ऽ गा ऽ	ज हाँ ऽ प्रे	ऽ म प रि	वा ऽ र, च

नोट—इस राग में दोनों निषाद लगती हैं। इस राग से मिलता जुलता राग मांड है।

हृद्वीणा

ज्योतिर्मय

[दर्बारी कानडा]

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि,
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि,
बलमसि बलं मयि धेहि,
ओजोऽस्योजो मयि धेहि,
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि ।
सहोऽसि सहो मयि धेहि........यजु. १८।३.

* * *

तुम हो ज्योति रूप तेजोमय,
हो प्रभु ! तेज प्रदान मुझे भी ।
वीर्यवान्, बलवान्, प्रभो तुम,
हो बल-वीर्य प्रदान मुझे भी ।
ओज रूप है रूप तुम्हारा,
हो अब ओज प्रदान मुझे भी ।
मन्यु रूप हो देव दयामय !
हे प्रभु ! मन्यु प्रदान मुझे भी ।
सहन शक्ति सामर्थ्यवान् हो,
सहन शक्ति दो दान मुझे भी ।

राग, दर्बारी कानडा [वाडव संपूर्ण]

[त्रिताल, मात्रा १६, वादी–रे; संवादी–प, समय अर्द्ध निशा]

आरोह में ध वर्ज्य, ग, ध, नी कोमल.

आरोह स्वरूप—

नी - स - रे - - ग, रे - स - म - प -

ध - - - नी - स -, स - - - ध - - -

सं - - - ध - - -, नी - प - म - प -

ग - - - म - रे -, स - - - - - - -

पकड़

ग - - - रे - रे -, स - - - ध - - -

नी - स - रे - - -, स - - - - - - - -

स्थायी

०	३	×	२
प ध म पं	नी स रे ग	- म म -	ग - स स
तु म हो ऽ	ज्यो ऽ ति रू	ऽ प ते ऽ	जो ऽ म य
सं ध नी प	म प ग ग	ग - ग म	रेग रेम गरे स
हो ऽ प्र भु	ते ऽ ज प्र	दा ऽ न मु	भेऽ ऽऽ भीऽ ऽ

अन्तरा

०				३				+				२			
म	–	प	ध	ध	ध	नी	नी	सं	–	सं	सं	रें	नी	सं	सं
वी	ऽ	र्य	वा	ऽ	न	ब	ल	वा	ऽ	न	प्र	भो	ऽ	तु	म
रें	–	रें	रें	रें	–	सं	रें	ग	–	ग	मं	र	गं	सं	–
हो	ऽ	ब	ल	वी	ऽ	र्य	प्र	दा	ऽ	न	मु	झे	ऽ	भी	ऽ
म	–	प	प	–	सं	सं	–	ग	–	ग	म	रे	–	स	–
ओ	ज	रु	प	ऽ	प	है	ऽ	रू	ऽ	प	तु	ह्मा	ऽ	रा	ऽ
सं	ध	नी	प	ध	म	प	ग	ग	–	ग	म	रेग	रेम	गरे	स
हो	ऽ	अ	ब	ओ	ऽ	ज	प्र	दा	ऽ	न	मु	झेऽ	ऽ	भीऽ	ऽ

दर्बारी कान्हड़ा राग को तानसेन ने गाकर अकबर को प्रसन्न किया था। इस राग की प्रकृति गम्भीर है क्योंकि यह मध्य-रात्रि में गाया जाता है। आरोह में गन्धार दुर्बल है। 'ग' में आन्दोलन अच्छा होता है। नी, प में इस राग की शोभा विशेष है। मुख्य चलन मन्द्र और मध्य में है।

माला

[तिलक कामोद]

मनमधुकर के मञ्जु-कुञ्ज वन !
हृदय-तन्त्रिका के झङ्कार ।
अहम्भावना के उन्मूलक,
प्रकृति-सुन्दरी के शृङ्गार ॥

हृदय-दृगों के मृदु-उन्मादक,
मधुर कल्पना के आधार,
पुण्य-प्रेयसी के प्रियनायक,
मूक-माधुरी के उद्गार ॥

मानव-जीवन के सञ्जीवन,
मन-मराल के विमल-विलास ।
प्रेमिजनों के सात्विक-सस्मित-
विस्मित-मानस के उच्छ्वास ।

ललित-लालसा के उद्भावक,
विरह-मिलन के शुभ सङ्गीत ।
मुग्ध-हृदय के मूर्छित पावक,
समता के इतिवृत्त पुनीत ॥

मन मयूर के श्याम सघन घन,
चित-चकोर के ह्लादक चन्द।
हृद्पतंग के उज्वल-दीपक,
नयन-शुक्ति के स्वाती-विन्दु ॥
अमर-शान्ति के निर्मल-निर्झर,
भावभृङ्ग के वन्य-विहार ।
हे सर्वस्व! विश्व-मण्डल के,
स्वर्गलोक के मधु-उपहार ॥

प्रेम-पुनीत देव ! हो तुमको,
प्रेम-पुनीत-प्रणाम अनेक ।
स्नेह-सूत्र में बाँध बनादे,
विश्व-हृदय की 'माला' एक ॥

राग—तिलक कामोद. [वाडव सम्पूर्ण]

[त्रिताल, मात्रा १६. समय ....]

आरोह में ध वर्ज्य.

इस राग का रूप देश या सोरठ से कुछ मिलता है। इसकी चाल वक्र है, इस से इस में विचित्रता अनुभव होती है।

आरोह का स्वरूप

स रे ग स रेम पध म प सं - - - सं - - -

ध - प - म - ग - स रे ग - स - नी -

पकड़

प नी स रे ग - स - रे प म ग म - नी -

स्थायी

०	३	+	२
रे ग रे प	म ग नी स	नी प नी स	रे ग नी स
म न म धु	क रे क ऽ	मं ऽ जु कुं	ऽ ज व न
प - नी स	रे ग नी स	रे प म ग	स - - नी
हृ द य तं	ऽ त्रि का ऽ	के ऽ भं ऽ	का ऽ ऽ र
म प नी सं	प नी सं रें	नी सं रें गं	नी सं सं सं
अ हं ऽ भा	ऽ व ना ऽ	के ऽ उ ऽ	न्मू ऽ ल क
प सं नी ध	प म ग रे	रे ग रे प	म ग स नी
प्र कृ ति ऽ	सुं ऽ द री	के ऽ भ्रं ऽ	गा ऽ ऽ र

अन्तरा

म – प प	नी – सं –	नी सं रें गं	नी – सं –
हृ द य हृ	गों ऽ के ऽ	मृ दु उ ऽ	न्मा ऽ द क
रें पं मं गं	रें गं नी सं	नी सं रें गं	सं – – –
म धु र क	ऽ ल्प ना ऽ	के ऽ आ ऽ	धा ऽ ऽ र
सं पं पं मं	मं गं गं रें	रें सं सं नी	नी सं सं –
प्र ण य प्रे	ऽ य सी ऽ	के ऽ प्रि य	ना ऽ य क
प सं नी ध	प म ग रे	रे ग रे प	म ग सनी स
मू ऽ क मा	ऽ धु री ऽ	के ऽ उ द्	गा ऽ ऽऽ र

अभ्युदय

अयि ! वेद वाणी ! तेरा संसार में विजय हो।
द्रुत* दिव्य-ज्योति से तव यह विश्व ज्योतिमय हो !

अज्ञान घन तिमिर÷ जो,
छाया हुआ गगन में,
तव ज्ञान रश्मियों+ से,
उसका नितान्त क्षय हो।

* *

हो उच्च भावनायें,
हो श्रेष्ठ साधनायें,
ज्ञान-प्रभा — प्रकाशित,
संसार का हृदय हो।

* *

हो वेद-सभ्याता का,
संसार फिर उपासक,
पर-ब्रह्म से मिलन हो,
परि-पूर्ण अभ्युदय× हो।

---

*शीघ्र, ÷अन्धकार, +किरण, ×लौकिक उन्नति।

'उषा अजीगुर्भुवनानि विश्वा'

(ऋग)

उषा

बीती निशा, उषा अब आयी,
जग से तिमिर भगाने को ।

विश्व-प्रेम स्वातन्त्र्य-मन्त्र की,
जीवन-ज्योति जगाने को ॥

राग, भीमपलासी.

[कव्वाली. ग, नी कोमल. समय–........]

x	०	x	०
			प प
			अ यि
म प ग रे	स रे – नी	स रे म –	– – ग म
बे ऽ ऽ ऽ	द वा ऽ णि	ते ऽ रा ऽ	ऽ ऽ मं ऽ
सा – ग म	प नी – ध	ग रे स –	– –; नी नी
सा ऽ ऽ ऽ	र में ऽ वि	ज य हो ऽ	ऽ ऽ; अ ऽ
नी – – ध	प ध म म	प ध सं –	– – सं सं
छा ऽ ऽ ऽ	न घ न ति	मि र जो ऽ	ऽ ऽ छा ऽ
नी गं रें गं	सं रें नीध प	प नी ध प	– –, प प
था ऽ ऽ ऽ	हु आ ऽऽ ग	ग न में ऽ	– –, त व
प मं नी ध	प ध म प	ग म प –	– – प प
छा ऽ ऽ ऽ	न र ऽ रिम	यों ऽ से ऽ	ऽ ऽ, उ स
म प ग म	प नी – ध	ग रे स –	– –, प प
का ऽ ऽ ऽ	नि ला ऽ न्त	ज य हो ऽ	ऽ ऽ, अ यि०

नोट:—स्थायी की दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति के समान बजेगी।

प्रतिज्ञा

[राग केदारा]

जननी ! जन्मभूमि ! हम सब तव,
सेवा में चित लायेंगे ।
तव पद पद्म भ्रमर बनकर, नित-
तव गुण गंज लगायेंगे ॥

तेरे दुख में दुखी रहेंगे,
सुख में हम सुख पायेंगे ।
अनुपम गुण गौरव गरिमा तव,
स्वर्ग समान बनायेंगे ॥

पूज्य जननि ! वह क्षण शुभ होगा,
जब तव हित बलि जायेंगे ।
तन-मन-धन सब अर्पण करके,
तव ऋण सकल चुकायेंगे ॥

महा शक्ति ! दे शक्ति हमें अब,
राष्ट्रिय-यज्ञ रचायेंगे ।
कर स्वतन्त्र निज भरत-भूमि को,
अक्षय कीर्ति कमायेंगे।

राग–केदारा.

[त्रिताल, मात्रा १६, वादी-म, संवादी स. समय-रात्रि का प्रथम प्रहर]

स्थायी

२				०				३				×			
स	म	म	–	म	म	म	म	स	प	प	प	प	प	प	प
ज	न	नी	ऽ	ज	ऽ	न्म	भू	ऽ	मि	ह	म	स	ब	त	व
मं	प	ध	सं	ध	प	मं	प	मं	प	ध	प	म	–	–	स
से	ऽ	वा	ऽ	में	ऽ	चि	त	ला	ऽ	यें	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ

नोट—स्थायी की शेष दोनों पंक्तियाँ इन्हीं के समान बजेंगी।

अन्तरा

सं	–	सं	–	सं	सं	सं	–	धनी	सरें	–	सं	ध	प	मं	प
ते	ऽ	रे	ऽ	दु	ख	में	ऽ	दुऽ	खीऽ	ऽ	र	हें	ऽ	गे	ऽ
ध	ध	ध	सं	ध	–	प	प	मं	प	ध	प	म	–	रे	स
सु	ख	में	ऽ	ह	म	सु	ख	पा	ऽ	यें	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ
स	म	स	म	स	म	स	म	स	प.	रे	प	रे	प	मं	प
अ	नु	प	म	गु	ण	गौ	ऽ	र	व	ग	रि	मा	ऽ	त	ब
मं	प	ध	सं	ध	प	मं	प	मं	प	ध	प	म	–	–	–
स्व	ऽ	र्गं	स	मा	ऽ	न	ब	ना	ऽ	यें	ऽ	गे	ऽ	ऽ	ऽ

जन्मभूमि

[*राग शङ्करा*]

जयतु जयतु जन्भूमि !
स्वर्गादपि प्यारी ॥

शोभे हिममकुट भाल,
नीलाञ्चल जलधि जाल,
कटि-पट विन्ध्यालि माल,
अतुलित द्युति धारी ।
जयतु जयतु जन्मभूमि ॥

* *

गङ्गामृत – सुधासार.
यमुना जल विमल धार,
सींचे वसुधा अपार,
मधुर मधुर वारी ।
जयतु जयतु जन्मभूमि ॥

* *

अमौषध-फल-अनन्त,
विलसे द्रुम-दल-दिगन्त,
बना रहे सदा वसन्त,
मधु-*मधु-छवि धारी ।
जयतु जयतु जन्मभूमि ॥

---

*मधु—वसन्त ।

[राग शङ्करा]

[एक ताल, मात्रा १२, गाने का समय रात्रिक द्वय प्रहर]
वादीग; संवादी नी,

स्थायी

+		०		२		०		३		४	
नि	ध	सां	नि	प	प	ग	–	प	ग	–	सा
ज	य	तु	ज	य	तु	ज	ऽ	न्म	भू	ऽ	मि
सा	–	म	–	प	प	निध	निध	निध	पग	पग	रेस
स्व	ऽ	ग।	य	द्	पि	प्या	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	री

अन्तरा

+		०		२		०		३		४	
प	–	सां	–	सां	सां	सां	नि	रें	सां	–	सं
सो	ऽ	भे	ऽ	हि	म	मु	कु	ट	भा	ऽ	ल
सा	–	निसां	रेसां	नि	ध	प	प	सां	नि	–	नि
नी	ऽ	लाऽ	ऽऽ	ज	ल	ज	ल	धि	जा	ऽ	ल
सां	सां	गं	गं	गं	–	गं	पं	गं	सां	–	सां
क	टि	त	ट	भि	ऽ	ऩ्थ्या	ऽ	लिं	म	ऽ	ल
नि	र	सां	नि	प	प	निध	निसां	निध	पम	पग	रेस
अ	तु	लि	त	शु	ति	धा	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	रीऽ

[जन्मभूमि की शेष कविता]

जिस के नभ में सहास,
निगमागम-रवि प्रकाश,
प्रथम प्रथम हुआ भास,
त्रिभुवन — तिमिरारी,
जयतु जयतु जन्म भूमि।

* *

जन्में मुनि कपिल व्यास,
गोतम कणभक्ष भास,
कविकुल गुरु कालिदास,
अनुपम मतिधारी।
जयतु जयतु जन्म भूमि।

* *

एक छत्रधर स्वतन्त्र
चक्रवर्ति राजतन्त्र
रहा यही महामन्त्र,
तन मन सञ्चारी।
जयतु जयतु जन्म भूमि,
स्वर्गा दपि प्यारी,

दिव्यनाद

मलयानिल पल पल में आकर,
मृदु-रव से यों कहती है,
प्राणादपि-प्रियतम-स्वतन्त्रता,
असिधारा में रहती है॥

सम्पर्क - 9029421718

राष्ट्र-गान

(गौड़ सारङ्ग)

हे ब्रह्मन् ! हो राष्ट्र हमारा,
विश्वशिरोमणि भारत प्यारा ।

हों बुध ब्रह्मवर्चसी ब्राह्मण,
महारथी राजन्य* विचक्षण,
साध्वी वीर-प्रसू महिलागण,
विजयी वीर सभेय† युवकगण,
हो सब सभ्य समाज हमारा ।

शूर इषव्य‡ यथेष्ट सुलभ हों,
दोग्ध्री धेनु बलिष्ठ वृषभ हों,
द्रुत-गति अश्व वायु सन्निभ:: हों,
समय समय पर घनयुतनभ हों,
बरसावे मधु मधु जल धारा ।

अन्नौषधि वैभव अनन्त हों,
द्रुम-दल-विलसित दिग् दिगन्त हों,
नर नारी सब तेजवन्त हों,
दिव्य-भाव दिशिदिश ज्वलन्त हों,
हो शुभ योग-क्षेम हमारा ।

---

* क्षत्रिय, † सभाचतुर, ‡ धनुर्धारी, :: सदृश,

यह गान 'आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्' इस वेदमन्त्र के आधार पर विरचित है ।

प्यारा-देश

[भैरवी]

जय जय जय मम देश ! प्यारा,
भारत-स्वर्ग समान हमारा,
त्रिभुवन का जगमगता तारा ।
जय जय जय मम देश ! प्यारा ।

* *

कल-निनादिनी तरल-तरङ्गा,
अमृत-वाहिनी यमुना गङ्गा,
बहती नित्य-मधुर जल धारा ।
जय जय जय मम देश ! प्यारा ॥

* *

ऋषि मुनियों का सर्जन हारा,
विश्व शिरोमणि देश हमारा,
सब से न्यारा—जगतसुहारा,
जय जय जय मम देश प्यारा ।
भारत स्वर्ग समान हमारा ॥

राग, मिश्रगौड़ सारङ्ग

[त्रिताल, स्थायी मात्रा १६]

२	०	३	×
ग म ग रे	स नी स -	रे ग ग रे	ग म ग -
हे ऽ ग्रा ऽ	ह्म न् हो ऽ	रा ऽ ष्ट्र ऽ	मा ऽ रा ऽ
गम गप मग रेरे	स नी सस	स - ग रे	गम गप मग -
विऽ ऽऽ श्वऽ शि	रो ऽ म णि	भा ऽ र त	प्याऽ ऽऽ राऽ ऽ

अन्तरा

२	०	३	×
प - म प	प म ग रे	ग म॑ प ध	म - ग -
हो ऽ बु ध	ब्र ऽ ह्म व	ऽ र्चं सी ऽ	ग्रा ऽ ह्म ण
पं प - प	म॑प म॑प पम गरे	प - प ध	ग म ग -
म हों ऽ र	थीऽ ऽऽ ऽऽ राऽ	ज ऽ न्य वि	च ऽ क्ष ण
सं धं नी प	ध म॑ प ग	सस गग पप गग	गम गप मग रेप
सा ऽ ध्वी ऽ	वी ऽ र प्र	सूऽ ऽऽ मऽ हिऽ	लाऽ ऽऽ गऽ णऽ
ध - ध -	ध - नी ध	प म॑ प ध	म ग म -
वि ज यी ऽ	वी ऽ र स	भे ऽ य यु	व क ज न

नोटः—हो सब सभ्य० इसका सरेगम स्थाई की प्रथम पंक्ति हे ब्रह्मन् के समान है।

वेदना

[दुर्गा]

अयि देवि ! जन्मभूमे !
भवतीं सदा भजेयम् ।
अपि ते पदारविंद-
द्वन्द्वे मिलिन्दयेयम ।

तमसावृतं मदीये, हृदि हेम-मन्दिरं यत् ।
तव दिव्य-तेजसा तत् सुतरां प्रदीपयेयम ॥
जननि ! त्वदन्न सलिलैः पुष्टं वपुर्मदीयम ।
यद् तत्पुनस्त्वदर्थम्, न कथं समर्पयेयम् ॥

× ×

सुमनोहरां त्वमूर्त्तिम् ,प्रणिभालयिष्यमित्थम् ।
हृदयं विदीर्य सदये ! यदि सम्प्रदर्शयेयम ॥
सानन्द-लोचनानाम् , गङ्गा-जलेन भवतीम् ।
अपि-भक्ति-भावनाया, कुसुमैः समर्चयेयम् ॥

अनुभूय भूतले,
परतन्त्रतां पुनस्त्वाम् ,
मातः ! द्रुतं स्वतन्त्रताम् ,
कर्तुं प्रभु भवेयम् ।

वेदना

[दुर्गा]

अयि देवि ! जन्मभूमे !
भवतीं सदा भजेयम् ।
अपि ते पदारविंद-
द्वन्द्वे मिलिन्दयेयम् ।

तमसावृतं मदीये, हृदि हेम-मन्दिरं यत् ।
तव दिव्य-तेजसा तत् सुतरां प्रदीपयेयम् ॥
जननि ! त्वदन्न सलिलैः पुष्टं वपुर्मदीयम् ।
वद तत्पुनस्त्वदर्थम्, न कथं समर्पयेयम् ॥

× ×

सुमनोहरां स्वमूर्त्तिम्, प्रणिभालयिष्यसित्वम् ।
हृदयं विदीर्य सदये ! यदि सम्प्रदर्शयेयम् ॥
सानन्द-लोचनानाम्, गङ्गा-जलेन भवतीम् ।
अपि-भक्ति-भावनायाः, कुसुमैः समर्चयेयम् ॥

उन्मूल्य मूलतस्ते,
परतन्त्रतां पुनस्त्वाम्,
मात ! द्रुतं स्वन्त्रताम्,
कर्त्तुं प्रभु र्भवेयम् ।

राग, भैरवी

[त्रिताल, मात्रा १६. समय प्रातः

स्थायी

०				+				+				२			
संगं	रेंसं	नीरें	संनी	धसं	नोध	पध	ध	सं	–	–	नि	धनि	संनि	ध	प
जऽ	यऽ	जऽ	यऽ	जऽ	ऽऽ	म	म	दे	ऽ	ऽ	श	प्याऽ	ऽऽ	रा	ऽ
ग	प	ध	नि	ध	प	ग	ग	गम	पध	प	म	रे	–	स	ऽ
भ	ऽ	र	त	स्व	ऽ	र्ग	स	माऽ	ऽऽ	न	ह	मा	ऽ	रा	ऽ
नि	नि	सा	ग	ग	म	ध	ध	म	म	ध	नि	संरें	संनि	ध	नि
त्रि	भु	व	न	का	ऽ	ज	ग	म	ग	ता	ऽ	ताऽ	ऽऽ	रा	ऽ

अन्तरा

ध	ध	ध	ध	ध	म	ध	नि	सं	सं	सं	सं	नि	सं	रें	सं
क	ल	नि	न	ऽ	दि	नी	ऽ	त	र	ल	त	रं	ऽ	ग	ऽ
नि	ग	रे	ग	रे	ग	रेग	म	सं	रें	सं	नी	सं	रे	सं	–
अ	मृ	त	वा	ऽ	हि	नीऽ	ऽ	य	मु	ना	ऽ	गं	ऽ	गा	ऽ
गं	गं	रें	सं	संरें	संनि	ध	नि	म	म	ध	नि	संरें	संनि	ध	नि
व	ह	ती	ऽ	स	दाऽ	ऽ	म	धु	र	ज	ल	धाऽ	ऽऽ	रा	ऽ

राग-दुर्गा. [ओड़व]

[दादरा मात्रा ६. समय रात्रि का २य प्रहर]

वादी-म; सम्वादी ध;

स्थायी

+			०			+			०		
										स	रे
										अ	यि
ध़	स	रे	म	–	प	ध	–	ध	–	ध	ध
दे	ऽ	वि	ज	ऽ	न्म	भू	ऽ	मे	ऽ	भ	व
सं	–	ध	प	ध	म	प	–	प	–,	ध	ध़
तीं	ऽ	स	दा	ऽ	भ	जे	ऽ	य	म्,	अ	पि
प	ध	प	म	प	म	रे	म	प	–	प	–
त	व	प	दा	ऽ	र	वि	ऽ	न्द	ऽ	द्व	ऽ
म़	प़	ध़	स	रे	म	म	–	म	–,	स	रे
दे	ऽ	मि	लि	ऽ	न्द	ये	ऽ	यं	मूं,	अ	यि०

अन्तरा

+			०			+			०		
										स	रे
										त	म
म	–	म	प	–	ध	सं	–	सं	–,	सं	सं
सा	ऽ	वृ	तं	ऽ	म	दी	ऽ	ये	ऽ,	हृ	दि
ध	सं	रें	सं	रें	मं	पं	–	पं	–,	पं	पं
हे	ऽ	म	म	ऽ	न्दि	र	म	य	तु,	त	व
मं	पं	मं	रें	मं	रें	ध	सं	रें	–	रें	रें
दि	ऽ	व्य	ते	ऽ	ज	सा	ऽ	त	ऽ	त्रि	त
सं	रें	सं	ध	म	प	सा	रे	म	–;	स	रे
रां	ऽ	प्र	दी	ऽ	प	ये	ऽ	य	म;	अ	यि०

नोट—इस राग में गन्धार और निषाद वर्ज्य हैं ।

धर्म

वैदिक-धर्म विश्व-हितकारी ।
है अति-प्रिय मुद-मङ्गलकारी ॥

वेद-सुधा बरसाने वाला,
योग-क्षेम सरसाने वाला;
स्नेह-सुमन हरषाने वाला,
शान्ति-सुखद-तापत्रय-हारी ।

वेद-धर्म से प्यार करें हम,
जग में जीवन-ज्योति भरें हम;
सत्पथ में न कदापि डरें हम,
हों दृढ धर्मवीर-व्रत-धारी ।

विश्व-प्रेम हो लक्ष्य हमारा,
न्याय पूर्ण हो पक्ष हमारा;
हो न अन्य समकक्ष हमारा,
अति उदात्त हो वृत्ति हमारी ।

जग में वैदिक-ज्योति जगा दें,
अन्धकार को दूर भगा दें;
अखिल विश्व को आर्य बनादें,
यही साधना रहे हमारी ।

नोट—इस भजन को 'वन्दे' राष्ट्र-गान आदि शीर्षक कविताओं के अनुसार या चौपाई के ढङ्ग से गा सकते हैं ।

भैरवी की सरल तान

[त्रिताल. कोमल—रे ग ध नी]

२	०	३	×
थि क उ गी	सभं मंगं गंरें रेंसं	संना नीध धप पम	पसं संनी नीध धप
पम मग गरे रेस	धनि स धनि स	धनी स धनि स	रे - स, स
			जा ऽ ग, प
थि क उ गी	धप धप धप धप	नीध पम गरे स	नीस गम पध नीसं
नीध पम गरे स	धनी सरे ग धनी	सरे ग धनी सरे	रे - स, प
			जा ऽ ग, प
थि क उ गी	सनी गम पध नीसं	संनी धप मग रेस	रे -
			जा ऽ ग, प
थि क उ गी	संनी धप मग रेस	धना स धनी स	रे -
			जा ऽ ग, प
थि क उ गी	संध नीप धम पग	मरे गस धनी स	रे -
			जा ऽ ग प
थि क उ गी	गंरें संनी रेंसं नीप	संनी धप नीध पम	धप मग, पम गरे
मग रेस गरे सनी	धनी स धनी स	धनी स धनी स	रे - स, स
			जा ऽ ग, प

नोट-- इस तान को हरेक त्रिताल या कहरवा में लगा सकते हैं।

लोरी

प्राणों का प्यारा, दुलारा !
मचल गया नयनों का तारा,
दुलारा ॥

* *

प्रणय विनय से तू पाया,
विधि ने है दिखाया;
क्या मुसकाया ? ? ?
मम जीवन का अचल सहारा,
दुलारा ॥

* *

मधुमय—मूर्ति—मन्त माया,
जिससे कान्त—काया;
क्या हुलसाया ? ? ?
मेरा रतन है, सबसे प्यारा,
प्राणों का प्यारा,
दुलारा ॥

नोट—यह कविता [illegible] विष्णु [illegible] के रिकार्ड में मास्टर विनायक द्वारा गाई गई है ।

वेद-वंसरी

[भैरवी]

बजती थी नित जो सखे !
क्यों न बजे, क्यों न बजे वेद-वंसरी !
मम मंजुल हृद् कुञ्जकुटी में,
क्यों न बजी, क्यों न बजी मृदु-वंसरी !

*   *

दिव्य-सुधा बरसाने वाली,
स्नेह-सुमन हरषाने वाली;
जीवन-तरु सरसाने वाली,
शान्ति-सुधा-मय-मधु-वंसरी;
क्यों न बजे, क्यों न बजे वेद-वंसरी !

राग, भैरवी.

[त्रिताल मात्रा १६. समय प्रात:काल]

स्थायी

०				३				×				२			
नी	स	ग	स	ग	म	प	नीध	प	-	-	-	-	-	-	-
ब	ज	ती	थी	नि	त	जो	स	खे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ग	ग	म	म	ग	ग	म	म	ग	प	म	गरे	स	-	-	सरे
क्यों	न	ब	जे	क्यों	न	ब	जे	वे	द	वं	सऽ	री	ऽ	ऽ	ऽऽ
सं	-	सं	सं	सं	सं	रें	सं	नी	-	सं	नी	ध	प	-	-
म	म	मं	ऽ	जु	ल	ह	द्	कुं	ऽ	ज	कु	टी	ऽ	में	ऽ
ग	ग	म	म	ग	ग	म	म	ग	प	म	ग	स	-	-	सरे
क्यों	न	ब	जी	क्यों	न	ब	जी	मृ	दु	वं	स	री	ऽ	ऽ	ऽऽ

अन्तरा

०	३	×	२
ध - म ध	ध - नी नी	सं - सं -	सं - सं -
दि ऽ व्य सु	धा ऽ ब र	सा ऽ ने ऽ	वा ऽ ली ऽ
गं - गं, गं	गं गं गं म	गं मं ग रें	सं नी सं -
स्ने ऽ ह सु	म न ह र	सा ऽ ने ऽ	वा ऽ ली ऽ
सं - प. प	प - - प	प ध नी सं	नी ध प -
जी ऽ व न	त रु ऽ स	र सा ऽ ने	वा ऽ ली ऽ
सं ध नी प	ध म प ग	गम पध नीसं नीध	पम गरे सनी स
शा ऽ न्ति सु	धा ऽ म य	मऽ धुऽ वंऽ सऽ	रीऽ ऽऽ ऽऽ ऽ

इति शम्